"हाय! अब मुझे केवल 'विक्टोरिया' कहकर पुकारने वाला नही रहा।" उस दुःखके समय श्रीमतीका स्वास्थ्य बहुत बिगड़गया था और उनके जीवन मेंभी संदेह किया जाता था परन्तु जिस समय १६ जनवरी सन् ६२ई० को पति मरणके एकही मासबाद उन्हें हार्टली परगनेसे एकभयानक दुर्घटना का संवाद मिला वह अपने दुःखको बिलकुल भूलगई। उसदिन उस परगने की एक कोयले की खानमें एकाएक अग्नि लगगई। इस बडवानलने २०४ मनुष्योंका स्वाह करदिया। दो सौ चार मनुष्यों के जीते जल जानेकी ख़बर पाकर श्रीमतीका हृदय विदीर्ण होगया। आपने आस्बर्नके राजभवनमेंसे खान वालों को तारदिया "कोयले की खानमें जल भरने वाले दीन मनुष्योंके बचनेकी यदि आशा हो तो इससे बढ़कर मुझे कोई हर्ष न होगा। उन दीनोंके लिये मेरा शरीर जलताहै।" श्रीमतीकी आशा फलवती न हुई और बिचारे दीन मजदूर दम घुट२कर मरगये। इसके बाद राजधानीमें इस दुर्घटनापर शोक प्रकाशित करनेके लिये एक महती सभाहुई उसके सभापतिके नाम आपने लिखवाया:– "श्रीमती अपने ऊपर भारी कष्ट पड़ने परभी हार्टलीकी प्राणघातक दुर्घटना पर बहुतही ध्यान देती रहीं और अंततक उन्हें आशा थी कि दीन मजदूरो में से कितनेही जीवित निकल सकेंगे परन्तु उनकी आशा निरर्थकगई। इसबातसे श्रीमतीको बड़ा दुःख हुआ। श्रीमतीने मुझको आज्ञादी है कि दीन विधवाओं और माताओंकी ओर वह बहुतही सहानुभूति रखती हैं। और अपने ऊपर जो आपत्ति आपड़ी है वह उससेभी बढ़कर इस दुःखको समझती हैं। उनको आशाहै कि इन लोगोंके संकट टालनेके लिये जो उपाय किये जांयगे उनमें संयुक्त होनेसे उन्हें संतोष और हर्षहोगा" यह पत्र श्रीमतीके प्राइवेट सेक्रेटरीकी ओरसे लिखागया था। इसके साथ श्रीमतीने १०० पौंडअपने निजखर्च मेंसे भेजे। इसका इतना प्रभाव पड़ाकि आगमें जलकर मरजाने वालोंके कुटुंबकी रक्षाके लिये जो फंड इकट्ठाहुआ उसमें ८१ हजार पौंड आये॥

अध्याय ४०.

वैधव्यका दुःख।

कमललोचनी, मृदुभाषिणी रानीविक्टोरियाने पतिके स्वर्गवास पीछे शोक व्रत धारण किया। उनका मुखकमल सूर्यास्तसे मुरझा गया, आंखोमें से जलक स्रोत बहने लगा, प्राणेश विना शरीर पीला पड़गया, मस्तिष्क शून्य होनेसे काममें अव्यवस्था होने लगी, और इसी कारण अपने दुःखसे प्रजाको दुःखित देखकर उन्होंने अपने शोक परित्यागका संकल्प किया परंतु "मेरा प्यारा एलबर्ट" उनके हृदयमें से न हटा॥

पति वियोगमें सहानुभूति प्रकाशित करने श्रीमतीके पास बेलजियमका राजा लियीपोल्ड और जर्मनीके कुमार होलिनलोही आस्बर्न आये । इन्होंने रानीको बहुत कुछ बोधदिया परंतु यह असाधारण कष्ट था । एक दोदिनके समझाने बुझानेसे इसका दुःख दूर होना संभव नथा । दोहीमास बाद युवराजने पूर्व देशकी यात्राकी । अब माताका आश्वासन करनेके लिये उन के पास केवल राज कुमारी एलिस और बिथेट्रिस रहगई । १ जुलाईको किसी प्रकारकी धूमधाम विना राजकुमारी एलिसका विवाह करना पड़ा क्योंकि वह वरयोग्य होगईथीं और उनके विवाहका समय अब टल नहीं सकताथा ॥

इसीवर्षकी १ सितंबरको लेकनमें युवराज (प्रिंसआफवेल्स) की अपनी भावी प्रियतमा डेनमार्कके राजाकी राजकुमारी परमसुंदरी एलेकज़ेंड्रा से प्रथम भेंट हुई । यहांकी बातचीतमें विवाह निश्चयहुआ ॥

फ्रागमोरके मैदानमें समाधि तैयार होजानेपर राज्ञीपति एलबर्टकी अस्थि सेंट ज्यार्जके गिरजेमेंसे निकालकर समाधिमें लाईगई । यह समाधिस्थल बड़ादर्शनीयहै । बीचमें मुसलमानोंके मकबरेके ढंगकी समाधि और उसके चारों ओर हरित कुंजहै । समाधिके भीतर एबर्डीनका संगमर्मर लगाया गयाहै और उसके ऊपर तांबेकी छतहै । इसके ऊपर सुवर्णका क्रूस चढ़ाया गयाहै । समाधिकेऊपर राजकुमार एलबर्टकी श्वेत पाषाणकी मूर्त्तिहै । समाधिको देखकर शृंगार प्रिय लोगोंके चित्तमें प्रेमका और वैराग्य प्रिय लोगोंके मनपर विरागका चित्र खिंचताहै । इससमाधि स्थलमें लेटिन भाषाका एक लेख अंकितहै । इसमें लिखा है कि—" वियोगिनी विधवा रानी विक्टोरियाने प्रिय पति प्रिंस एलबर्टके शरीर के यावत् नश्यमान पदार्थ यहां रखवाये । यहीं पर वहभी अन्तमें प्रियपतिके साथ सुखकी निद्रालेगी ॥"

एलबर्टके वार्षिक श्राद्धके लगभग सदरलैंडकी डचेज़ने रानीके पास एक बाइबिलभेंटमें भेजी । यह भेंट इंग्लैंडकी अनेक राजभक्त विधवाओंकी ओर सेथी । श्रीमतीने भेंट स्वीकारकर डचेज़को एक पत्रमें लिखा कि—" राजभक्त विधवाओंकी ओरसे सहानुभूति सूचक पत्रके साथ भेंटपाकर मेरे हृदयमें प्रेम उत्पन्न हुआहै । कृपापूर्वक विधवा रानीकी ओरसे विधवा बहनोंको इस सहानुभूतिके लिये धन्यवाद दीजिये । यद्यपि इस संसारमें अब प्राणनाथके दर्शन दुर्लभ हैं परंतु मृत्युके अनन्तर सदाकी भेंटका विचार करनेसे मुझे परम संतोषहै । उन् 'अनेक विधवाओं' को ईश्वर शांति और सहायतादे यही चूर्ण हृदया रानीकी हार्दिक प्रार्थना है ।"

युवराज (प्रिंसआफ्‌वेल्स)



युवराजपत्नी एलेक्ज़ेंड्रिना।



अध्याय ४१.

युवराजका विवाह और श्रीमतीकीयात्रा।

७ मार्चको जब श्रीमान् युवराजकी दुलहिन डेनमार्क जैसे दूरदेशसे चलकर लंडनमें आई लंडनही क्या बरन इंग्लैंडभरमें हर्षकी दुंदुभी बजनेलगी। राजकुमारी एलेक्जेंड्राके साथ उनके माता पिता भाई और बहन थे। युवराजने राजकुमारीका स्वागत किया और दोनों साथ २ लंडनमें फिरनेके लिये निकले। नगरवासियोंने हर्षगर्जनासे इस भावी जोड़ीका स्वागत किया। रानीने मिलते समय पुत्रीके समानप्रेम किया। १० मार्च सन् १८६३ ई० को विवाह स्थिर हुआ। उस दिन सेंटजेम्सके गिरजेमें बड़ी धूमधामसे तैयारी हुई। रानी पुत्रका विवाह देखनेके लिये आई तो सही परंतु शोकसूचक वस्त्र पहनेहुए आकर विवाहमण्डपसे बहुत दूर बैठगई। विवाहके अनन्तर वरवधू सुहागरातके लिये आस्बर्नमें जाकर बसे। विवाहकी रात्रिमें लण्डन नगरमें रोशनी कीगई थी। इसकी शोभा देखनेके लिये बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई इस भीड़में कुचलकर छः मनुष्योंके प्राण गये। इसी वर्षमें राजकुमारी एलिसके पुत्रका जन्म हुआ।

एकान्तवाससे श्रीमतीके शोकमें न्यूनता न हुई और वारम्वार पतिके स्मरणसे उनका हृदय अधिक दुःखित रहनेलगा इसलिये श्रीमतीने जर्मनी और बेलजियमकी यात्राकी। इन्होंने बेलजियमके राजाको साथ लेकर प्रथम पति एलबर्टकी जन्मभूमि ऐसेन्यूको गमन किया। पतिका जन्मस्थान देखतेही रानीको पुरानी बात स्मरण होआई। और बहुत देर तक श्रीमती रोती रहीं। ७ सितम्बरको यात्रासे लौटकर आपने इंग्लैंडके बालमोरल स्थानमें अपनी पूंजीसे पतिके स्मारकमें एक स्तम्भ बनवाया। यह स्तम्भ त्रिशंकुके आकारका बनाहुआ है। इसपर श्रीमतीने लिखवाया:—"महाशय और पुण्यशाली अतिवल्लभ राज्ञीपति एलबर्टके स्मरणार्थ उनकी विदीर्णहृदया विधवा रानीने बनवाया, अगस्त २१ सन् १८६२ ई० "॥

७ अक्टूबरको राजकुमारी एलिस और हेलेनाको लेकर रानीने स्काटलैंडकी यात्राकी। एलथ नाग्युथेस्कमें श्रीमती वायु सेवनके लिये गईथीं। दो मील तक अन्धकारमें चलने बाद गाड़ी एकाएक उलट गई। सवारियां नीचे गिरीं। श्रीमतीके मुख और हाथ में चोट आई। दोनों घोड़े उलटे गिरगये। परंतु ईश्वरने सब लोगोंके प्राण बचाये॥

अध्याय ४२.

पौत्रका जन्म और शोक मुक्त रानी।

८ जनवरी सन् १८६४ ई० को युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स)के पुत्रका जन्म हुआ। यह प्रसव अकस्मात् हो पड़ा। जन्म के समय न कोई दाई पास थी और न दासी। सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। श्रीमतीको पौत्र जन्मसे अतीव हर्ष हुआ। आपने राजकुमारका नाम एलबर्ट विक्टर रक्खा। इसी दिनसे पतिशोक कम हुआ और राजकीय धूम धाम, जो तीन वर्ष तक बन्द रहाथा, फिर प्रचलित हुआ। इसके अनंतर राजकुमारी हेलेनाका राजकुमार क्रिश्चियनके साथ विवाह हुआ।

अब एकान्त वास छोड़कर श्रीमतीकी इच्छा प्रकाश रूप पर राजकीय काम करनेकी हुई। पतिमरणके अनन्तर पार्लियामेंट संबंधी काम काज श्रीमतीने परोक्ष रीतिसे किया था किन्तु सन् १८६६ई०की १६ फरवरीको प्रजाका अधिक आग्रह देखकर श्रीमतीने स्वयं पार्लियामेंट खोली। इस समय यह उत्सव सदाकी अपेक्षा अधिक धूम धामसे किया गया किन्तु श्रीमतीने अपने शोकसूचक वस्त्रोंका त्याग न किया। और निसासे डालती हुई सिंहासन पर विराज करपुत्र बधूसे हाथ मिलानेके सिवाय किसीसे बात चीत नकी। इस वर्षके अक्टूबर मासमें एबर्डीन नगरमें पानीके नल लगानेके लिये जो काम तैयार हुआ उसके उत्सवमें श्रीमती उपस्थित हुईं। इस उत्सव पर श्रीमतीने पति वियोगके बाद प्रथम ही व्याख्यान दिया। आपके मुखके सारगर्भित, प्रेम भरे वाक्य सुनकर प्रजाको अधिक हर्ष हुआ।

हृदयसे पतिका शोक हलका करनेके लिये श्रीमतीने पतिका चरित्र लिखनेका कार्य लेफ्टिनेंट जनरल सीग्रेको सौंपाथा। पुस्तक लिखनेका कार्य उन्होंने इसी वर्षमें समाप्त किया। श्रीमतीने इसकी रचनामें बड़ा उत्साह दिखाया और अपने याद की सारी बातें ग्रंथकारको लिखवादीं।

स्विट्ज़र लैंडकी यात्रासे लौटकर जब आपने विंडसर महलमें निवास किया तब एक दिन आप वायु सेवन करतीं २ एक बनवासिनीके झोंपडेमें जा पहुंची। उसके पास बैठकर आपने धर्मका उपदेश दिया। इस घटनासे ब्रिटिश प्रजाके हृदयमें विश्वास दृढ होगया कि श्रीमती गर्व छोड़कर अमीर गरीबको समान गिनने वालीहैं। इसीवर्ष में राजकुमारी लुसीका मार्किस आफ् लोर्नसे विवाह ठहरा। इसविषयमें श्रीमतीने अपनी दिनचर्या में लिखाहै "बाहरसे

फिरकर जब मैं सातबजे घर पहुंची तब डरती२ लुसी मेरे पास आई। उसने शिर नीचा किये हुए लज्जित होकर मुझसे कहाकि आज लोर्नेने मुझपर बड़ाप्यार दिखलाया और मुझसे विवाहकी बातचीतकी। मैंने इस आशासे 'हां' कहदिया कि आप इस बात को स्वीकार करलोगी।" श्रीमतीने इस बातको स्वीकार किया। सन् १८७१ ई० की २१ मार्चको इनका विवाह हुआ। इसके बाद अपरेल मासमें श्रीमतीने राजधानीमें फ्रांसके पदच्युत राजा नेपोलियनसे भेंटकर उनका बड़ा सत्कार किया॥

अध्याय ४३.

युवराजकी बीमारी।

२५ नवंबर सन् १८७१ ई० को अकस्मात् युवराज (प्रिंसआफ़वेल्स) को ज्वर पीडा हुई। राजकुमारी बियेट्रिसेन भाईकी बड़ी सेवाकी। बीमारीकी ख़बर पातेही राज्यभरमें खलभली मचगई। ८ दिसंबरको रोगने अधिक बल पकड़ा। प्रजाकी बेचैनीका ठिकाना न रहा। घड़ी२आरोग्य होनेके समाचारोंकी लोग राह देखने लगे। १० दिसंबरको राज्यभरके गिरजों और मन्दिरोंमें ईश्वर प्रार्थना की गई। १४ दिसंबर को रोग औरभी बढ़गया परन्तु फिर ईश्वर कृपासे शनैः२ आरोग्यहुआ और प्रजाकी सहानुभूतिका श्रीमतीने एक विशेष आज्ञापत्रमें प्रेम पूर्वक उत्तर दिया। उसमें लिखाथा कि:—"मेरे प्राणप्रिय युवराज (प्रिंस आफ वेल्स) की बीमारीमें प्रजाने जैसी सहानुभूति प्रकाशितकी है और उसकी आरोग्यता चाहीहै उससे मेरा बड़ा उपकार हुआ। समस्त प्रजा और मेरी प्रियपुत्रियोंने इस भयानक और दयाजनक स्थिति में जैसी दया युवराजके लिये दिखाई है वह उसके हृदयमें सदा अंकित रहैगी। यह बात नई नहीं है। दशवर्ष पूर्व मेरे चतुर प्राणनाथकी बीमारीके अवसर परभी प्रजाने ऐसीही राज-भक्ति और प्रेम प्रदर्शित किया था। जिसके लिये मैं धन्यवाद देतीहूं। मैं अपने पुत्रकी ओरसे प्रजाका उपकार मानकर आशा करती हूं कि युवराजकी संपूर्ण आरोग्यता के लिये प्रजा ईश्वरसे प्रार्थना करैगी।" युवराजके आरोग्यहोने पर २७ फरवरीको लंडनमें एक त्योहार मनाया गयाथा। उसदिन सेंटपालके गिरजे में बड़ीधूमधामसे परमेश्वरकी प्रार्थना कीगई। श्रीमती भी उस समय अपने कुटुम्ब सहित उपस्थित हुई। इस उत्सव पर अनुमान तेरह हज़ार मनुष्योंसे गिरजा खचाखच भरगया था॥

दो दिन बाद श्रीमती सायंकालको वायुसेवनके लिये गईथीं। लतामण्डपमें से एक लड़का एक हाथमें पत्र और दूसरेमें पिस्तोल लेकर निकला। और लपक कर गाड़ीपर चढ़आया। श्रीमती स्थानसे विचलित न हुई। लड़का उसी समय पकड़ लिया गया। उसके पास एक पत्र था जिसमें एक राजद्रोही कैदीको छोड़ देनेकी प्रार्थना थी। इस लड़केका नाम आर्थर ओकोनर था। लड़केको न्यायालयसे एक वर्षका जेल और बैतका दंड मिला। सन् १८७४ई० की २३ जनवरी को ड्यूक आफ् एडिनवरा रूसके सम्राट्‌की राजपुत्रीसे विवाहकर लण्डन आये। इस वर्षके जून मासमें श्रीमतीने पशु पक्षियोंपर दयाकर उनके कष्ट मिटानेवाली मण्डलीकी ज्यूबिलीमें संयुक्त होकर इस दयामय कार्यकी उत्तेजनादी। इसी वर्ष के अक्टूबर मासमें श्रीमतीके सेवक जान ब्राउनका पिता मरगया। रानी उसके शवसंस्कार में पैदल चलकर स्मशान तक गई।

अध्याय ४४.

अनेक घटनायें।

सन् १८७८ ई० में स्काटलैंडकी यात्रासे लौटने बाद श्रीमतीको टैम्स नदी में वूलविच के निकट दो जहाजोंके टकराकर डूबजानेके समाचार मिले। इसमें छः सौ मनुष्य जलमग्न होगये। इस घटना से श्रीमतीको बड़ा दुःख हुआ। इस वर्ष में आपने राजकुमारी लुसीके पति मार्किस आफ् लार्नको केनेडाका गवर्नर जनरल बनाया। श्रीमतीके शासनमें राजकुटुम्ब के लोगोंको सेनाके सिवाय प्रबन्ध विभागका उच्चपद देनेका यह प्रथम और अन्तिम अवसर था क्योंकि इनके सिवाय कोई राजपुरुष अबतक कहींका गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल नहीं हुआ।

सन् ७९ ई० की जनवरीमें एडवर्ड बेंजामिन नामक पागलने श्रीमतीपर गोली चलानेकी धमकी दी। सन् ८२ई० की १ मार्चको रोजर मेकलीने विंडसर स्टेशन पर श्रीमतीको गोली मारी। श्रीमती ईश्वर कृपासे बचगई। १४ मार्चको ड्यूक आफ् एलबनीका विवाह हुआ। सन् ८३ में अकस्मात् श्रीमती महलमें फिरते२ गिर गई। पैरमें चोट ऐसी आई जिससे आपको एक वर्ष तक वेदना भोगनी पड़ी॥

सन् १८८१ ई० के अपरेल मासमें इंग्लैंडके प्रधान अमात्य राजनीति कुशल लार्ड बीकान्सफील्डका देहान्त होगया। यह बडे चतुर, विद्वान्, साहसी और सज्जनथे। दीनस्थिति से बढ़ते २ राज्यके दीवान हुएथे। रानीका इनपर बड़ास्नेहथा इस

लिये श्रीमतीने इनके स्मारकमें एक स्तंभ बनवाया। इसके शिलालेख में लिखवाया कि–"लार्ड बीकान्सफील्डकी सम्मानिनीया और स्नेही रानी विक्टोरियाने उनके सम्मानमें यह स्तंभ खड़ाकिया। वह सत्यभाषी और राजसेवी थे।"

सन् ८५ की २३ जूलाईको श्रीमतीकी सबसे छोटी पुत्री कुमारी बियेट्रिसका राजकुमार हेनरी आफ् बेटनबर्गसे विवाह हुआ ॥

अध्याय ४९.

महारानीकी संततिकी मृत्यु ।

यद्यपि माता और पतिके मरणसे श्रीमतीको बहुतदुःख हुआथा और वह दुःख श्रीमतीके साथही गया परंतु सन् १८७८ ई० तक आप अपनी संततिके सुखसे सदा सुखी रहतींथी। इसवर्षमें श्रीमतीकी दुलारी कन्या राजकुमारी एलिसको डोरमेस्टरके राजमहलमें संग्रहणीकी बीमारीहुई।साथही ज्वरने आघेरा। कुमारी एलिस श्रीमतीकी सब संतानोंमें स्वभावकी अच्छी, परिश्रमी और दयालुथी। राजकुटुंबमें किसीके बीमार होतेही वह आगे पड़कर उसकी सेवा कियाकरतीं और उनकी दयालु प्रकृतिको देखकर लोगोंकी उनपर अधिक पूज्यबुद्धिथी। राजकुमारीकी बीमारीसे प्रजाको बहुत चिन्ता हुई। अकस्मात् सन्निपात होगया। प्रलापमें बड़ बड़ाने लगीं । और मरने पूर्व कहा कि:–"अब मैं शान्त निद्रामें दीर्घ कालके लिये शयन करतींहूं।" पिताकी मृत्युकी सतरहवीं बरसीको राजकुमारीका देहान्त होगया। इनकी मृत्युसे रानी, राजकुटुंब और प्रजाको बहुत शोकहुआ ॥

दुःखपर दुःख पडताहै। पुत्रीकी मृत्युका घाव अभी पुरनेका समय नहीं आया था इतनेहीमें श्रीमतीपर दूसरी आपत्ति आई। अंतिम पुत्र माताको अधिक प्रिय होताहै। श्रीमतीको ड्यूक आफ एलबनी पर विशेष प्रीतिथी। वह स्वभावके कोमलथे।शारीरिक बलके कामोंमें वह अधिक परिश्रम करने योग्य न थे। उनको विद्यासे बड़ी प्रीतिथी। वह एकान्तमें रहना अधिक पसंद करते थे। वह साहित्यके बड़े प्रेमीथे और व्याख्यान उनका बड़ाछटादार होताथा। उनके एकही कन्या थी। इनका नाम एलिसथा। सन् १८८४ ई० के मार्चकी२७ तारीखको इनके पैरमें गहरी चोटआई और दूसरेही दिन केन्स स्थानमें मृत्यु वशहुए।यह खबर तारद्वारा राजधानीमें पहुंची। माता और पत्निके शोक की सीमा न रही। श्रीमतीने विंडसरसे प्रयाणकर क्रेमोंटमें अपनी पुत्रवधूके शोकमें सहानुभूति की। ५ अपरेलको

अंतेष्ठि क्रियाहुई । युवराज केन्स जाकर भाईका शव लंडन लाये । माताने अंतिम बार पुत्रके मुखका गिरजे में अवलोकन किया । अश्रुपातसे राजकुटुंब के कपड़े भीग गयेथे । महारानीके हृदयपर पुत्रशोकका वज्रपात् हुआ । मिट्टीमें मिट्टी मिलगई ॥

श्रीमतीके दुःखका यहींपर अंत नहुआ। सन्१८८८ई० के अपेरलमें एकाएक श्रीमतीके प्रथम राजकुमारीके पति जर्मनीके सम्राट् श्रीमान फ्रेडरिककी बीमारी के समाचार विदितहुए । श्रीमतीको इसबातसे बड़ी चिन्ता हुई । मई और जून मासमें रोग कम होगया । परन्तु १४ जूनको फिर समाचार मिले कि फेफडोंका शोथ बहुत बढ़गयाहै । १५ जूनको दिनके ११। बजे श्रीमान्का देहान्तहोगया । इस समय इनका वय ५७ वर्षका था । इन्होंने केवल ९९ दिन राज्य किया । इनकी मृत्युके अनंतर इनके बड़े पुत्र सम्राट् द्वितीय विलियमको जर्मनीका राज्य मिला । १८ जूनको पार्लियामेंटकी दोनों सभाओंने मिलकर महारानी विक्टोरिया और उनकी बड़ी राजकुमारी (मृत सम्राट्की प्रियपत्नी) के साथ बहुतही प्रभावोत्पादक और हृदयद्रावक शब्दोंमें सहानुभूति और शोक प्रकाशित किया । और इस व्याख्यानमें उनके गुणोंका वर्णन किया ॥

श्रीमतीके हृदयपर चौथा आघात उनके प्रिय पौत्र ड्यूक आफ क्लेरेंसकी मृत्युसे, जो भारतमें प्रिंस एलबर्ट विक्टरके नामसे प्रसिद्धथे, पहुंचा। भारतवर्षकी यात्रामें आनन्द प्रमोद और प्रजाके प्रेम और भक्तिका अनुभव प्राप्त करने बाद प्रिंस एलबर्ट विक्टरको विलायतमें पहुंचे अधिक काल नहीं होने पायाथा इतनेही में एकाएक उन्हें९ जनवरी सन्९२ई०को सरदी लगगई । सरदीने इतना बलपकड़ा कि तुरंतही उन्हें इन्फ्लूऐंजा हुआ । उन दिनों में इस रोगने राजधानीमें हैज़े के समान मारकता ग्रहण कररक्खी थी । डाक्टर पर डाक्टर आये 'रत्नोंका जतन' करने के लिये अच्छी तरह उपाय कियागया । खूब दौड़ धूपहुई । परन्तु बीमारहोनेसे छठे दिन अर्थात१४जनवरीको आपने श्रीमतीको, अपने माता पिता,भाई और राजकुटुंबको शोकसागरमें डालकर स्वर्गकी यात्राकी।इससे कुछही सप्ताह बाद श्रीमान् का विवाह टेककी राजकुमारीसे होना निश्चय हो चुकाथा परंतु कालने यह अवसर न आने दिया । उनकी मृत्युसे ब्रिटिश साम्राज की संपूर्ण प्रजाको शोक हुआ । भारतकी प्रजा उनके दर्शन करचुकीथी इसलिये उसे अधिक शोक हुआ और श्रीमतीके अन्यान्य दुःखोंकी अपेक्षा भारत वासियोंने विशेष रूप पर शोक प्रकाशित किया । राजकुमारकी समाधिके दिन युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स) ने एक पत्र प्रकाशित किया:—" ग्रेट ब्रिटेन, आयर्लैंड,

उपनिवेशों और भारत वर्षकी श्रीमतीकी प्रजाने हमारे प्रिय ज्येष्ठ पुत्रकी मृत्युके समय हम पर जो आपत्ति पड़ी उसमें सार्व जनिक सहानुभूति प्रकाशित कर हमें उपकृत किया इसलिये हम उसे धन्यवाद देतेहैं। यदि ऐसे अवसरमें सहानुभूतिसे चित्तको विश्राम मिलता हो तो हमारे दुःखित हृदयमें हमारे शोकमें उनका भागी होना हमें सदा स्मरणीय होगा और यदि संभव होगा तो इस बातका स्मरणही उन्हें अपने प्रिय राज्यका प्रेम भाजन करैगा।" इसी तरह २७ जनवरी के लंडन और भारत वर्षके सरकारी गजटमें श्रीमती महारानीका एक पत्र प्रकाशित हुआ जिसमें लिखाथा किः—"मुझ पर, मेरे कुटुंब और जातिपर एक बारके सिवाय ऐसी दुःखदायिनी और हृदय विदारक आपदा पहले कभी नहीं आई थीं। इस समय मेरे साम्राज्यके प्रत्येक विभागकी प्रजाने हार्दिक सहानुभूति और राजभक्ति प्रकाशितकी उसे मैं स्वीकार करती हूं। मेरा प्रिय पौत्र अचानक कली फूलने पूर्वही अलग होगया। वह बड़ा शिष्ट, होनहार और सर्व प्रियथा। उसकी मृत्युके दुःखको उसके दुःखिया माता पिता, उसकी प्यारी दुलहिन, और उसकी दादी ईश्वरकी अनिर्वाय इच्छा पर छोड़ती है। लाखों मनुष्योंकी हार्दिक और सच्ची सहानुभूतिके लिये, जो उन्होंने ऐसे अवसर पर प्रकाशित की मैं अपनी और अपने बालकोंकी ओरसे, सच्चे अन्तःकरणसे धन्यवाद देतीहूं। मेरे पौत्रको मैं अपने पुत्रके समान जानतीथी और वहभी मुझसे पुत्रकासा वात्सल्य रखताथा। उसके वियोगमें प्रजाकी सहानुभूतिसे मेरे और मेरे कुटुंबके दुःखमें बहुत कुछ विश्राम और सहायता मिलैगी। मेरे शासनके अंतिम तीन वर्षमें मुझपर बहुत आपत्तियां आई हैं। चाहे मेरा परिश्रम, चिन्ता, और मेरे पदके अनुसार उत्तर दातृत्व बहुत भारी है परंतु परमेश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि वह जबतक मेरा शरीर रहै मेरे देश और साम्राज्यका भला करनेके लिये मुझे शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान करै।"—

दोही वर्षके बाद राजकुटुब पर एक आपदा और आई। श्रीमती महारानीकी प्रियपुत्री राजकुमारी बियेट्रिसके प्रियपति राजकुमार हेनरी आफ् बेटनबर्ग अपनी सेना सहित ६ दिसम्बर सन ९३ई०को कुमासी लोगोंसे युद्ध करनेके लिये श्रीमतीसे विदा हुये, मार्गहीमें जहाज 'ब्लोंड' पर केप कोस्ट केसलसे मदीरा जाते हुए उनको एफ्रिकाके प्राणघाती ज्वरने धर दबाया। दो दिनकी भयानक बीमारीमें २० जनवरी सन् ९४ई०को उनका प्रिय प्राण प्रयाण करगया। २२ जनवरी को तारद्वारा यह शोकजनक सम्वाद लण्डन में पहुँचा। श्रीमती महारानी और उनकी प्रियपुत्रीको इस बातसे बड़ा शोक हुआ। राजकुटुम्बने २३ जनवरीसे ५

मार्च तक इसका शोक किया। ३ फरवरीको राजकुमार हेनरीका शव इंग्लैंडको लाया गया और वहीं दफनाया गया। इस समयभी महारानीने पौत्रके मृत्युकी तरह प्रजाकी सहानुभूतिका उपकार माना॥

पांचवर्षतक राज कुटुंबमें किसी प्रकारकी आपत्ति न आई। श्रीमती महारानीके अंतिम वर्ष में अर्थात् सन् १९०० ई० में अपने पिताकी जागीर कोवर्ग और गोथामें श्रीमतीके द्वितीयपुत्र ड्यूक आफ् एडिनबराका अचानक देहान्त होगया। महारानीका जीवन समाप्त होते २ इस आघातने आपको बहुत दुःखित किया और इसके सिवाय ट्रांसवाल युद्धमें एकदौहित्रकी मृत्युका शोक श्रीमतीको अंत समय तक रहा। श्रीमतीकी मृत्युके छः मास बाद सन् १९०१के अगस्त मास में इनकी बड़ी राजकुमारीका देहान्त जर्मनीमें होगया॥

अध्याय ४६.

महारानीकी संतति।

"बहु कुटुंबी बहु सुखी और बहु कुटुंबी बहुदुःखी" यह कहावत महारानीके विषयमें ठीक चरितार्थ होतीहै। श्रीमतीके वृहत कुटुंबमें पुत्र पौत्र पुत्री पति और माताकी मृत्युसे महारानीको जो शोक हुआ उसका दिग्दर्शन गत अध्यायमें हुआ है श्रीमतीके पुत्र पुत्रियों के जन्म विवाहादिके समाचार इस पुस्तकके भिन्न२अध्यायोंमें प्रकाशित होचुके हैं। श्रीमतीके उदरसे चारपुत्रहुए। युवराज १ ड्यूक आफ् एडिनवरा २, ड्यूक आफ् कनाट३ और ड्यूक आफ एलबनी ४ इनमें प्रथमपुत्र आजकल भारतेश्वर श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड हैं। तृतीयबहुत वर्षोंतक बंबई प्रान्तकी सेनाके अध्यक्ष रहचुके हैं। द्वितीय और चतुर्थ पुत्रका देहान्त होगया॥

श्रीमतीकी पांच पुत्रियों में प्रथम राजकुमारी विक्टोरिया आज कलके जर्मन सम्राट द्वितीय विलियमकी माता थीं। इनके सिवाय चारपुत्रियोंमें एकका देहान्त होगया। शेष सब विद्यमानहैं। पांचवी कन्या बियेट्रिस विधवा हैं। पांचोंकन्या और चारों पुत्रोंके नाम संततिका व्यौरा विवाहादिका वर्णन इस पुस्तकमें वंशवृक्ष छपाहै उससे मालूमहोगा॥

श्रीमतीके चरपुत्र और पांचपुत्रीकी कुल८०संतानमें ६६ इससमय विद्यमानहैं। १४ का देहान्त होगया। विद्यमाननें श्रीमतीके दोपुत्र, ३ कन्यायें, ३ पौत्र, १० पौत्री, ७ दौहित्र, १२ दौहित्री, पौत्र और पौत्रीके पुत्र ३ पुत्री ५ दौहित्री और दौहित्रके पुत्र १४ पुत्री ७ हैं॥

श्रीमतीके बड़े राजकुमार आज कल भारतके सम्राट और ग्रेट ब्रिटेनके राजा सप्तम एडवर्डहैं । बड़ी पुत्रीके पुत्र जर्मनीके सम्राट् द्वितीय विलियमहैं । पौत्रीके पुत्र रोमेनियाके भावीराजा राजकुमार केरोलहैं । दौहित्रीको पुत्र ग्रीसको भावीराजा राजकुमार ज्यार्जहैं । और दूसरी दौहित्रीकी कन्या राजकुमारी ग्रैंड डचेज् ओलगी रूसके वर्तम्गन सम्राट् जार निकोलसके पीछे रूसके राज्यासनपर बैठने वालीहैं । इसतरह इस समय श्रीमतीके कुटुंबमें पांच राज्यहैं । श्रीमतीके कुल ८० पुत्र पौत्रादिकोंमेंसे इस समय जो ६६ विद्यमानहैं, उनमें पुत्री दौहित्रीके पात और पुत्र पौत्रोंकी पत्नियोंकी गणना नहीं कीगईहै । ईश्वर इस बृहत् कुटुंबको चिरंजीवी करै ॥

अध्याय ४७.

राजपौत्र और पौत्रीके विवाह !

युवराज (प्रिंसआफ् वेल्स) के द्वितीयपुत्र ड्यूक आफ् यार्क, जिनका नाम राजकुमार ज्यार्जहै, उनके विवाहसे श्रीमतीके शासनमें कौटुंबिक अंतिम आनन्द था। ड्यूक आफ क्लारेंस से राजकुमारी टेकका विवाह पक्का हुआथा किन्तु विवाह से कुछ सप्ताह पूर्व उनकी अकाल मृत्यु होगई और उन्ही राजकुमारीका संबंध इनसे निश्चय हुआ । यह विवाह ६ जुलाई सन् ९३ को हुआ । विवाहके बाद जिससमय श्रीमान् नवीन दुलहिनको लेकर राजमार्गमें निकले प्रजाको परम हर्ष हुआ । महारानी विक्टोरियाको पति पुत्र पौत्रादिके मरणसे जो दुःख हुआथा उसकी ६ जुलाईको शांतिहुई । श्रीमतीके वृहत्जीवनमें आपने अनेकही दुःख और सुख देखे परंतु पौत्रके विवाहसे बढ़कर उनके लिये कोई सुख न था। केवल इतना ही नहीं किन्तु श्रीमतीने इस जोड़ीका फलभी दर्शन कर लिया । श्रीमतीके आगे ड्यूक आफ् यार्कके तीन पुत्र और एक कन्या हुई। श्रीमतीका वह चित्र जो इस अध्यायमें लगाया गयाहै इस सुखसे दर्शकोंके चित्तको आनन्दित किये विना नहीं रह सकता । यह युद्ध विद्यामें बडी प्रवीण और ब्रिटिश सेनाके एक अध्यक्ष हैं । इनके बड़े पुत्र श्रीमती महारानीके बड़े प्रपौत्र राजकुमार एडवर्ड एलबर्टका जन्म २३ जून सन् १८९४ ई०का है ।

इसके सिवाय सन् ९६ की जूलाईमें राजकुटुंबमें एक और मंगल कार्य हुआ । बकिंगहामके प्राइवेट गिरजेमें युवराज (प्रिंस आफ् वेल्स) की कुमारी माडका विवाह डेनमार्कके राजकुमार चार्लसके साथ हुआ । दूलहका वय पच्चीस वर्षका था । यह दुलहिनसे उमरमें दो वर्ष चार मास कम था । दूलह दुलहिन मामा फूफीके भाई बहनहैं । दोनोंहीको बाल वयसे पास खेलनेका काम पड़ाथा। २० जूलाईके शुभ मुहूर्तमें यह महोत्सव हुआ । उस दिन लंडनमें दीपमालिका की गई । विवाह कर दूलह दुलहिनको अपने देश डेनमार्क लेगये ।



राजपौत्र ड्यूक आफ् यार्क ।



राजपौत्र वधू ।



प्रपौत्र प्रपौत्री समेत महारानी।



राजकुमारी विक्टोरिया आफ़ यार्क राजकुमार हेनरी आफ़ यार्क महारानी
राजकुमार एलबर्ट आफ़ यार्क राजकुमार एडवर्ड आफ़ यार्क

अध्याय ४८.

युवराजका रौप्य विवाह और इम्पीरियल इन्स्टीटयूट ।

यूरोपियन लोगोंमें विवाहसे पच्चीस वर्ष बाद रौप्य विवाहके नामसे एक उत्सव करनेकी चाल है । युवराजके विवाहको १० मार्च सन् ८८ को पचीस वर्ष हुए । यद्यपि जर्मनीके सम्राट् श्रीमती महारानीके बड़े दामाद फ्रेडरिककी मृत्युका अभी शोक नवीनही था परंतु यह उत्सव किया गया । शोकके कारण उत्सवमें विशेष धूम धाम न हुई । मार्लबरो हाउस के जलसेमें लंडनकी म्यूनिसिपेलिटीने युवराज को इम्पीरियल इन्स्टीटयूटका नमूना चाँदीमें बनवाकर भेट किया । इस उत्सवमें श्रीमती भी उपस्थित हुईं । नगरमें उस दिन दिवाली की गई ।

इसी वर्षकी २१ मार्चको श्रीमतीने इटालीकी । यात्राकी मार्गमें फ्लोरेंस होते हुए आपने इन्सब्रूकमें आस्ट्रियाके सम्राट्से भेंटकी और वहांसे बर्लिन जाकर दामाद फ्रेडरिकसे जो उस समय तक बीमारथे मिलीं । लंडन पहुंचकर सन् ८९ के आरंभमें मटाबली लैंड (एफ्रिका) के राजा लोबेंगूलाके दो प्रतिनिधियोंसे मिलने बाद आपने वसंत ऋतुमें फिर बाल मोरल की कौंटेसके भेषमें यात्राके लिये प्रयाणकिया । ७ मार्चसे २७ मार्चतक बियारिजमें निवासकर स्पेन की राजमातासे भेंटकी । इससे पहले इंग्लैंडका राजा वा रानी स्पेनको नहीं गयाथा । सन् १८९० ई०में श्रीमतीने फिर चेरंबर्ग होकर एक्सकी यात्राकी ॥

सन् ९३ की १० मईको केन सिंगटनमें श्रीमतीने इम्पीरियल इन्स्टीटयूट खोला । बकिंगहाम से महारानीकी सवारी बड़े ठाटके साथ उक्तस्थानको गई । मार्गमें दर्शकोंकी बड़ी भीड़थी । इस नवीन महलके निकट एक मंडप खडाकर उसमें उत्सव किया गयाथा । मंडपमें श्रीमान् इन्दोरनरेश, जोधपुर नरेशके भाई श्रीमान् सर प्रतापसिंहजी और अनेक भारतवासी राजा महाराजा उपस्थित हुएथे । भारत के राजाओंके विलायत गमनका प्रायः यह प्रथमही अवसर था । महारानीके साथ राजकुटुंबके सब व्यक्ति इकट्ठे हुएथे । इन्स्टीटयूट खोलते समय श्रीमतीने जो व्याख्यान पढ़ा वह उनकी वृद्धावस्था और मंदस्वरके कारण उपस्थित लोगोंके सुननेमें नहीं आया । फिर श्रीमतीकी आज्ञासे युवराजने मकानको खोलनेकी क्रिया की । उत्सव समाप्त होने बाद जब श्रीमती वहांसे चलने लगीं तब चलते २ भारतवासी राजाओंके पास खड़ीं रहकर आपने सबसे हाथ मिलाया और प्रत्येक का कुशलप्रश्नकिया । इसके सिवाय श्रीमतीने कृपाकर देशी राजाओंको राजप्रासादमें पृथक् २ मिलनेकाभी अवसर दिया और उनसे सत्कार पूर्वक बातचीत कर उन्हें प्रसन्नकिया ॥

इसी वर्षकी २६ नवंबरको रूसके ज़ार द्वितीय निकोलससे श्रीमतीकी कुमारी एलिसकी पुत्री एलेकूजेंड्राका विवाह सेंटपीटर्सबर्गमें हुआ । इस हर्षमें महारानी ने राजधानीमें उत्सव किया और नवीन जारको ब्रिटिश सेनाका कर्नल बनाया॥

सन् ९५ की फरवरीमें जर्मनीका 'एलब' नामक जहाज ४०० मनुष्यों सहित लोस्टोफ्टके निकट समुद्रमें डूबगया। केवल एकही स्त्री तैर कर बची। उसका नाम मिस वाकरथा। श्रीमतीने उसके मुखसे इस दुर्घटना का वर्णन सुननेके लिये उसे बुलवाया । और ४०० मनुष्योंकी मृत्युके समयकी हड़बड़ी और दयाजनक स्थिति सुनकर आपका हृदय भरआया । आँखोंमेंसे आँसू बहने लगे ॥

नवंबरमें श्रीमतीने इंग्लैंडमें पुर्तगालके राजा और वेचुआनालैंडके राजा खांमा का स्वागतकिया । खामाने श्रीमतीको शेरके चमडेके वस्त्र भेंटकिये ॥

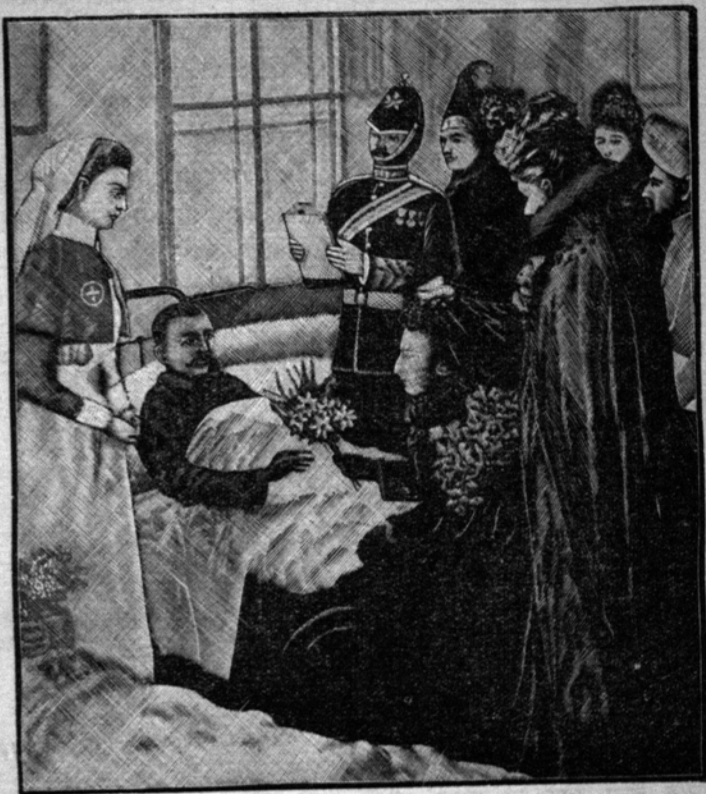
सन् ९६ में आपने नाइसके निकट सीमिज का निरीक्षण करनेके लिये यात्रा की । ९ मार्चको श्रीमती सीमिज पहुंचीं । १३ को आपसे आस्ट्रियाके सम्राट् मिलने आये । सीमिजमें कुछ काल पूर्व पहाड़ गिर गया था । इसीको देखने श्रीमती गई थीं ।

अध्याय ४९.

प्रजा प्रेम ।

महारानी विक्टोरिया का प्रजाके साथ माताके समान प्रेम था और उनकी प्रजा उन्हें इसी भावसे देखती थी।श्रीमतीके पति,पुत्री,पुत्र,पौत्र और दामादकी मृत्युपर ब्रिटिश साम्राज्य भर की प्रजाने शोकके आँसू बहायेथे । उनके कुटुंबमें ज़रासाभी किसीके शिर दुखतेही राज्यभरमें और विशेषकर भारत वर्ष के मंदिर मसजिद और गिरजों में इनकी मंगल कामनामें ईश्वर प्रार्थना होने लगती थीं । जहां कहीं प्रजाके कष्टका थोडासाभी संवाद उनके कानपर पहुंचता उसी समय वह तार वा पत्र द्वारा वहां की स्थितिका अन्वेषण करतीं और जहांतक होसकता अपने पाससे द्रव्य देकर वा राजकर्मचारियों से अनुरोध कर सहायता करतीं । अस्पताल में जा२कर युद्धसे लौटे हुए घायलों की देख भाल करना, उन्हें फूलके गुलदस्ते, पुस्तक वा ऐसेही और पदार्थ प्रेम पूर्वक भेंट करना उनकी स्वाभाविक चालथी । १४ मई सन् ९८ को आपने नेटली अस्पतालमें चित्रालके घायलोंको देखकर पुष्प गुच्छ भेट किया था।और ट्रांसवालसे लौटे हुए वीर घायलोंको भी आप कई बार देखने गईथीं । इस विषयका एक चित्र नीचे लगाया गया है ॥

अस्पतालका निरीक्षण ।



राज कुटुंबमे किसीकी मृत्यु होने पर इस विशाल राज्यकी भिन्न २ जातिकी प्रजाकी ओरसे एकतंत्र वा अलग २ जो सहानुभूति प्रकाशित हुई उनपर आपने हार्दिक धन्यवाद दिया था। इन धन्यवाद पत्रोंका अनुवाद पहले दो बार इस पुस्तकमें प्रकाशित हुआहै। श्रीमतीको इस प्रकारके धन्यवाद पत्र प्रकाशित करनेका कुल ७ वार अवसर पड़ा था। १ पतिकी मृत्युपर, २ युवराजकी बीमारी पर, ३ कुमारी एलिसकी मृत्यु, ४ श्रीमतीपर आक्रमणहोने पर, ५ ड्यूक आफ़ एलबनी की मृत्यु पर, ६ राजपौत्र विक्टरकी मृत्यु पर और ७ पुत्री बियेट्रिस और प्रथम राजकुमारी के विधवा होने पर इन सब पत्रोंके प्रकाशित करने का इस लघु पुस्तकमें स्थान नहीं है। श्रीमती पर आक्रमण होने के समय जो प्रजाकी ओरसे सहानुभूति प्रकाशित हुई उसके उत्तरमें आपके प्राइवेट सेक्रेटरीने लिखाथा कि—"श्रीमती इंग्लैंडसे विश्राम लेनेके लिये विदा होने पूर्व सच्चे अंतःकरणसे प्रकाशित करतीहैं कि मेरी सब जाति की प्रजाकी ओरसे और अन्यदेशों, राज्यों और राजा प्रजाकी ओरसे मेरी आपत्ति पर जो प्रेम, भक्ति और सहानुभूति प्रकाशित हुई उससे मुझे बहुत आनन्द हुआहै। रानी नहीं जानतीहैं कि इस धूमधामके लिये वह क्योंकर और किसतरह पर अपना धन्यवाद और आनन्द जो, उनके चित्तमें हुआहै, प्रकाशित करसकैंगी परन्तु वह चाहतींहैं कि सर्वोच्चसे लेकर दीनाति दीनकी सेवामें मेरे अन्तःकरणका बहुत२ धन्यबाद पहुंचायाजावै। उनकी यह सदासे इच्छाहैकि जहांतक मुझसे होसकै मैं अपने प्रिय देश की प्रतिष्ठा और वैभव बढाऊं और उन लोगों की उन्नतिका प्रयत्न करूं जिनपर मैं दीर्घ कालसे शासन करतीहूं। और इसीप्रकार का प्रयत्न मेरे अंतिम श्वासतक प्रचलित रहेगी॥"

अध्याय ५०.

महारानीकी आय।

भारतवर्षके राजामहाराजा राज्यके द्रव्यको अपना समझकर अपने सुख और वैभवके के कामोंमें आजकल व्यय करतेहैं और अनेक अवसरपर उनकी दीनप्रजा भूखों मरा करतीहैं परन्तु इंग्लैंडकी यह प्रथा नहीं है। वहां राजकोषसे राजाका कुछ प्रयोजन नहीं रहताहै। राज्यकी ओरसे उसके वार्षिक व्ययके लिये वेतन नियत रहताहै और विवाह शादियोंके लिये राज्य उन्हें अलग खर्च देताहै बस उसीमेंसे खर्च करनेका उन्हें अधिकारहै। राजकोषका द्रव्य प्रजाका समझाजाताहै। श्रीमती महारानी विक्टोरिया के निजखर्चके लिये भी इसी तरह वेतन नियतथा।

श्रीमतीके प्राइवेट सेक्रेटरीने सन् १८८५ई० में कहाथा कि महारानीके पास इस समय दश लाख पौंड भी नहींहै । उस वर्षके बाद उनके खर्चकी व्यवथा करनेसे बचत बढ़ने लगीथी । परन्तु सन् ८७ ई० की ज्युबिलीमें श्रीमतीने राजकीय द्रव्यके सिवाय अपने पाससे भी बहुत कुछ रुपया लगायाथा इसकारण आपपर कुछ ऋणहोगयाथा । श्रीमती को ब्रिटिशराज्यसे निज खर्चके लिये ६० हज़ारपौंड, घरेलू कामों के लिये १ लाख ७२ ॥ हज़ार पौंड, नौकरोंके वेतन और पेन्शनके लिये १ लाख ३१ हज़ार २६० पौंड तथा पुण्यार्थ, इनाम और ईश्वरोपासनाके लिये ८ हज़ार ४० पौंड मिला करताथा ॥

इसके सिवाय ८ हज़ार पौंड श्रीमतीको उनकी माताकी जागीरका मिलताथा। उनके पतिका वार्षिक वेतन ३० हज़ारपौंड अलग हीथा । युवराजकी आय इससे अलग और उनको वेतनभी सरकारसे अलग मिलताथा। उनकी वार्षिक आय ५० हज़ार पौंड थी । श्रीमतीको वृद्धसुनार होवर्डने जिसकी तृतीयज्यार्ज के समय लंडनमें बहुत बड़ी दूकानथी ५ लाख पौंड विरासतमें दियाथा । श्रीमतीको अपने पतिकी मृत्युके समय ६ लाख पौंड उनके पाससे मिलाथा सन् ८१ में उन्होंने ७८ हज़ारपौंडके मूल्यकी एक जागीर खरीदकीथी । इसी तरह उन्होंने आस्बर्नकी जागीरभी मोललीथी । उनकी जागीरमें ३७३७२ एकड़ भूमिथी । इससे २० से २५ हज़ारपौंड तक वार्षिक आय होतीथी । क्लेरमोंट उन्हे राज्यकी ओरसे सन् ६६ में इस शर्तपर दियागयाथाकि उनकी मृत्युके पश्चात् उसका खालसा होजाय और उसपर श्रीमतीके वारिसोंका स्वत्वनरहै । ज्युबिलीके वा अन्याय उत्सवोंपर प्रजावर्ग वा विदेशीराजाओंने श्रीमतीको जो२ पदार्थ भेंट किये उनका मूल्यभी बहुतही बढ़करहै। उनके पास जवाहिरातका बहुत कुछ संग्रहथा । इनका मूल्य हज़ारोंपौंडसे कम नहींहैं ॥

अध्याय ५१.

श्रीमतीकादान ।

श्रीमतीके दानका विस्तार पूर्वक लेखानहीं प्रकाशित होसकताहै । लोग उनके गुप्तदानके विषयमें बहुतही कम जानते हैं । उन्होंने प्रकाश रूपपर जन साधारणके फंडोंमें जितना दियाथा उससेभी बढ़कर उनका गुप्तरीतिपर पुण्यार्थ कामोंमें व्यय होताथा । कोबर्गमें राज्ञीपतिके गाड़ीसे गिरकर बचजानेपर श्रीमती ने वहाके लोगोंके एक हज़ारपौंड इसलिये दियाथा कि इसके व्याजसे इसवटनाके

दिन प्रतिवर्ष एकउत्सव किया जाया करै । इसमेंसे युवा स्त्री पुरुषोंको जो नेक चलनहों धनोपार्जनके लिये औजार दियेजौय और लड़कियोंके विवाहमें दीन माता पिता की सहायता की जाय । सन् ७७में आपने १ हजारपौंड देकर हेवुडमें वहांकी प्रजाके सुखके लिये एक बाग बनवादियाथा । श्रीमतीने दीन अनाथ और अशक्त जानवरोंपर दयाकरनेवाली मंडलीको १०० पौंडदिया और सन् ९० के क्रिस्टमस (बड़े दिन) को लंडनके ११६८ वृद्ध स्त्री पुरुषोंको जिनका वय ८० से ९० वर्ष तकका था पालन पोषणके लिये द्रव्य दिया। और यह सदा नियम रक्खा कि राजधानीके हज़ारों अपाहिजों और दीनोंको प्रति वर्ष बड़े दिन पर भोज दिया जाय। जहां कहीं श्रीमती यात्राके लिये जातीं वहांके छोटे बड़े कर्म चारियोंको जो आपकी सेवामें नियत किये जाते, भरपूर पारितोषिक देतीं और प्रत्येक स्थानके अनाथोंको मुक्त हस्तसे दिया करतींथीं । श्रीमतीकी जागीरके प्रत्येक बालकोंको खिलौना देना आपका साधारण नियम था ।

क्रीमियाके युद्धका विशेष वर्णन अन्यत्र हुआ है । इस स्थलपर इतना लिखना आवश्यक है कि इस युद्धमें मिस फ्लोरेंस नाइटिंगेलने घायल सिपाहियोंकी युद्ध क्षेत्रमें बहुत कुछ सहायता कर प्राण पर जोखिम उठाईथी । जब वह स्त्री युद्ध-से लौटी तो आपने उसका सत्कार करने के लिये अपने पास बुलाया और उसे एक जवाहर युक्त आभूषण जिसपर "दयालुका आशीर्वाद" खुदा हुआ था भेट किया। यह एक नमूना है । इसी तरह लोगोंका उत्साह बढ़ानेके लिये श्रीमती दिया करतीं थीं। भारतमें जब २ अकाल पड़ा आपने बड़ी उदारतासे चंदेकी लिस्टमें सबसे प्रथम अपना नाम लिखवाया और हज़ारों पौंड अपने पाससे दिया। ट्रांसवालके युद्ध (सन् १८९९–१९००) में आपने लेडीस्मिथके किलेमें घिरने वाले अंगरेज और भारत वासियोंको एक २ चाकलेटका बाक्स भेंट किया। एक पारसीने भारतके अकाल पीड़ितोंकी सहायताके लिये अपना बाक्स बेच दिया। उससे बहुतसा द्रव्य आया।

अध्याय ५२.

समाज शोधन की रुचि और धैर्य ।

प्रजाकी स्थिति सुधारनेपर श्रीमतीका बहुत ध्यान था । वह जहांतक हो सकताथा इस कार्य के लिये गुप्त और प्रकट प्रयत्न किया करती थीं । प्रजामें शिक्षा फैलाना उनका मुख्य उद्देश्य था। ड्यूक आफ् आर्गाइलका कथन था कि–" इस देशके राजा रानी प्रजामें शिक्षा फैलानेका प्रयत्न करते हैं। यह

उनका कर्तव्य है । श्रीमती सुख और दुःखके समय समान रूपपर इस बातपर ध्यान देती रही हैं । " सन् १८४६ ई० में पतिकी सम्मतिसे आपने सार्वजनिक शिक्षाका इंग्लैंडकी प्रजाके लाभार्थ प्रस्ताव किया था । सप्ताह भरमें एकदिन धर्म संबंधी शिक्षा के लिये पाठशालाओंमें नियत करना उनका मुख्य उद्देश था ।

वारंवार की रेल्वे दुर्घटना और प्राणघातसे श्रीमतीको निश्चय होगयाकि मेरी जितनी रेल्वे यात्राके समय सुश्रूषा की जातीहै उतनीही सर्व साधारणके लिये उपेक्षा होती है । इस बातको जानकर श्रीमतीने एक आज्ञा रेल्वे के प्रबंधकोंके नाम सन् १८६५ ई० में प्रकाशित की । उसका आशय यह था:—"श्रीमतीको आशाहै कि जबसे रेल्वे के प्रबंधकोंने देशभरकीयात्रा का मार्ग अपने हाथमें ले लियाहै और अन्यमार्ग उठगये हैं उन लोगोंका उत्तर दातृत्व कितना बढ़गयाहै उसे वे अच्छी तरह जानते होंगे ।"इस आज्ञा का इंग्लैंडकी रेल्वे लाइनोंपर चाहे जैसा प्रभाव पड़ाहो किन्तु भारतके कार्यकर्त्ता लोग इसे बिलकुल नहीं जानते क्योंकि यहांके लोगोंके कष्टकी गुहार श्रीमतीके कान तक नहीं पहुंचती थी । सर्व साधारण में दया और साहस उत्पन्न करनेके लिये श्रीमतीने, आत्म समर्पणकर दूसरे के प्राण बचाने वालोंको देनेके लिये विक्टोरिया क्रास और एलबर्ट मेडल नियत किये थे ॥

यद्यपि 'कंसेटएक्ट' भारत वासियों में सहवास और गर्भाधान संस्कार की प्रणाली के अनुकूल न था परन्तु जब भारतवासी अंगरेजोंने और उनके से स्वभाव वाले देशियों ने श्रीमतीके कान तक देशी स्त्रियों के कष्टकी बात सुनाई तब उन्हों ने इस कार्यके विषयमें इंग्लैंडमें जो आन्दोलन हुआ उसमें साथ दिया था और इसी तरह लार्ड डफ़रिन साहब की मेमके नामपर जो भारत वर्ष में बृहत् उद्योगसे अस्पताल स्थापित हुए उन में भी मुख्य प्रेरणा श्रीमती की थी और जब २ नवीन वाइसराय नियत होकर आने से पूर्व श्रीमतीसे मिलने गये तब ही तब उनकी पत्नियों को उन्होंने इस शुकार्य पर ध्यान दिलाया था ॥

चाहे प्रकाश रूपपर स्त्रियोंकी स्वतंत्रताके लिये उनके शासनमें कोई विशेष आईन न बनाहो और पार्लियामेंटमें मेंबर चुननेका अधिकार स्त्रियोंको देनेके विषयमें भी उक्तसभा अभीतक आनाकानी कर रही है परन्तु इंग्लैंडका वर्तमान उत्कृष्ट स्त्री स्वातंत्र्य श्रीमतीके शासनकाही परिणाम है । इसमें संदेह नहीहै कि वह स्त्रियोंको स्वतंत्रताकी सीमासे अधिक नहीं बढ़नेदेना चाहती थीं । विवाह

और एक पत्नि तथा एकपतिव्रतको वह बहुतही पवित्र समझती थीं।और राजकुटुंबमें कोईभी पुनर्विवाह न करै ऐसी उनकी इच्छाथी।इस उद्देश्यके पालनके लिये वह कभी ऐसी स्त्री वा पुरुषका अपने पास आनाजाना पसंद नहीं करतीथीं जो पुनर्विवाह के पक्षपातीहों। थोड़े वर्ष पूर्व एक अमीरकी लड़कीने अपना दूसरा विवाह करना चाहा। एक पतिको छोड़कर दूसरा वरने वालीके साथ उनकी पूरी२घृणाथी इसलिये श्रीमतीने उस लेडीको अनेकवार इसकार्यसे वारणकिया परंतु जब उसने न माना तो आपने उसका अपने पास आना जाना बन्द करदिया। और इसी तरह राजकुटुंब और प्रजावर्गको समान माननेके लिये उन्होंने अपनी एक कन्याका विवाह किसी राजकुटुंबके व्यक्तिके बदले साधारण उमरावके लड़केसे कियाथा। इंग्लैंडके राजकुटुंबमें पतिकी मृत्युके पीछे दूसरा पति करनेकी चालहै। श्रीमती की माता डचेज़् आफ़्कैंटनेभी प्रथम पतिके मरनेबाद श्रीमतीके पितासे विवाह कियाथा परंतु श्रीमतीने पातिव्रतका पालनकर संसारको दिखलादिया कि सच्चा पति प्रेम ऐसा होताहै ॥

सर्वत्रके राजा अपने दुःखको प्रजाके दुःख से अधिक समझतेहैं और इसीतरहका वर्त्ताव करनेमें प्रजाको कुछ अनुचितभी नहीं जानपड़ताहै परंतु जब ट्रांसवाल युद्ध (सन् १८९९–१९००) से इंग्लैंडकी प्रजाकी ओरसे भेजी हुई सेना विजयपाकर लौटी उसीके साथ श्रीमतीके दौहित्र प्रिंसक्रिश्चियनकी मृत्यु की खबर मिलीथी। यहशोकसंवाद ऐसाथा कि यदि श्रीमती चाहतीं तो सेनाके स्वागतकी धूम धाम बन्दकर सकती थीं परंतु अपने दुःखको दबाकर प्रजाके सुखमें श्रीमतीने भंग न होनेदिया।और इस शोक संवादको उस समय प्रकाशित होने दिया जबकि धूमधामसे सेनाका स्वागत होचुका। इसकार्यके करनेसे श्रीमतीने राजा और प्रजामें इसबातका उदाहरण कर दिया कि प्रजाके सुखमें राआओंको अपना दुःख भूल जाना चाहिये ॥

अध्याय ५३.

श्रीमतीका परिश्रम।

महारानी परिश्रम करनेमें कभी थकती नहीं थीं। वह आशासे अधिक लोक सेवा और राजकीय कामोंमें समय बिताती थीं। सन्१८४८ ई०के बारहमासमें उन्होंने २८ हज़ार डिस्पेचोंको पढ़ा और उन पर सम्मति दीथी। यह संख्या

विदेशीय विभागके कागज़ोंकी थी किन्तु उपनिवेश विभाग और होम विभागके कागज़भी इनसे कम नथे। सन् ५४ से कागज़ इकट्ठे होते होते उनकी संख्या १६००० होगईथी और इनका फैसला करनेमें श्रीमती पर बहुत बोझा पड़ना संभव था इसलिये सन् ६२ में सेना संबंधी कागजों पर हस्ताक्षर करनेके लिये पार्लियामेंटने एक कमीशन नियत करनेका प्रस्ताव कियाथा ।

श्रीमतीके एक सेवक ने उनके चारित्रमें लिखा है कि मैंने" श्रीमतीको कभी विश्राम लेते वा कुछ भी नहीं करते हुए नहीं देखा। " राज्यशासन का बोझा उनके ऊपर पड़तेही वह सोतेसे शीघ्र उठने लगीं और अठारह वर्षके वय में इतना भारी बोझा अपने ऊपर झेलकर उन्होंने एक दृढ पुरुषके बराबर परिश्रम किया। इस समय भी उन्होंने प्रातःकालका वायु सेवन नहीं छोड़ा। " इंग्लैंड और विदेशके मुख्य २ दैनिक समाचार पत्रोंको पढ़ना और अमात्यों और प्रिवी कौंसिलसे नित्य मिलकर प्रत्येक कागज़ को ध्यान पूर्वक पढ़ना और फिर उसपर हस्ताक्षर करना उनका नित्य नियम था।

विवाहके पश्चात् अन्य स्त्री पुरुषोंकी तरह भोग विलासमें पडनेके बदले उन्होंने काममें अधिक परिश्रम करना आरंभ किया और राज्ञीपति इसमें सहायक हुए । इसके सिवाय उनके निवास करने के महलोंको भी उन्होंने अपनेही समक्ष देख भालकर अपनी योजनासे बनवाया । राज्ञीपतिको संगीत अधिक प्रियथा इसलिये पतिको प्रसन्न करनेकी इच्छासे उन्हें नित्य इस कार्यमें भी समय लगाना पड़ता था। इसके सिवाय "डायरी" में नित्य अपनी दिनचर्या लिखना और नित्यके आये हुए पत्रोंका नित्य ही उत्तर देना उनका साधारण कार्यथा। भारत वर्षके बलवे और क्रीमियाके युद्धके दिनोंमें उनकी चिन्ता बढ़गई थी और शासनारंभके कितनेही वर्षोंतक इंग्लैंडके व्यापार और शिल्पकी दशा अच्छी नहीं थी इस कारण बीसों वर्षतक उन्हें नित्यके कामोंके सिवाय इन बातोंपर बहुत ही विचार करना पड़ाथा। बीमारी और यात्राके दिनोंमें भी वह अपना काम नहीं छोड़तीथीं । परंतु धर्म क्रियाओंके लिये श्रीमती रविवारके दिन कुछ काम नहीं करतीथीं। एक वार शनिवारको आपका एक मंत्री ऐसे समयमें कुछ कागज़ लेकर आया जब श्रीमती किसी आमोद प्रमोदके कार्यमें लगी हुई थीं। मंत्रीने कहाकिः—"कामतो आवश्यक है परंतु अभी आपके आनन्दमें मैं विघ्न नहीं डालना चाहताहूं। कल आकर कागज़ सुनादूंगा।" श्रीमती बोलीं:—" नहीं कल धर्म कार्य का दिन है। मैं कल कोई राजकीय कार्य

न करूंगी । परसों कागज़ देखनेसे काममें देर हो जायगी इसलिये मुझे अभी सुना दो । " अपना काम छोड़कर श्रीमतीने उसी समय उस कागज़को देखा और उसपर हस्ताक्षर कर दिये ।

अध्याय ८४.

महारानीका स्वभाव ।

महारानी विक्टोरियाके सरल स्वभाव, दया, बुद्धिमता और साहसके अनेक किस्से सुनेजातेहैं उनको संग्रहकर पृथक् पुस्तकाकारमें छपवाना पाठकों के लिये बहुत मनोरंजक और उपदेशजनक होसकताहै किन्तु इस पुस्तकमें उनको संग्रह करनेसे स्थानाभावका डरहै । इस कारण दशपांच किस्से इस जगह लिखताहूं ॥

किटीकियर नाम की बुढ़ियापर श्रीमतीकी बड़ी दयाथी।यह स्त्री आपके महल के निकट पहाड़ीपर किसी झोपडीमें रहती थी । वहां पुराने ढंगके चरखेसे सूत कातनाही इसका पेशा था । एक दिन श्रीमतीने उसकी झोपडीमें जाकर उसे एक गर्म लहँगा दिया । स्त्रीने लहँगेको देखकर कहाः—'परमेश्वर तुम्हारी और तुम्हारे बालकोंकी दोनों लोकमें रक्षा करैगा । परमेश्वर तुम्हारा पथदर्शक होगा और तुमको सब हानियोंसे बचावेगा ।" बिचारी बुढ़ियाके सरल हृदयका आशीर्वाद सरल हृदया रानीके लिये बहुतही योग्यथा ॥

श्रीमतीका बालकों से बड़ा प्रेमथा।सन्१८७६ई०में आप लंडनके एक अस्पताल-लको देखने गई थीं । जिस समय वह अस्पतालका निरीक्षण कररही थीं उनके आनेकी ख़बर एक बीमार लड़की ने सुनी । लड़कीने दाईसे पुकार कर कहाः— "कृपाकर मुझे रानीके दर्शन करा दो, मैं देखते ही अच्छी हो जाऊंगी । " किसीने श्रीमती से लड़की की बात कहदी । वह उसी समय उसके पास लौटकर गई और मीठी २ बातोंसे लड़की का अच्छी तरह मनोरंजन कर-दिया । उसके हृदयकी पीडा मिटगई और इसके द्वारा उसके आरोग्य होनेमें बहुत कुछ सहायता पहुँची ॥

महारानीको प्रजाके साथ दिखावटी प्रेम नहींथा । लोगोंपर प्राणसंकट हो-नेका आघात श्रीमतीके हृदयतक पहुँचताथा । प्रजाके चित्तसे आपके हृदयका टेलीफोन लगाथा । जिस समय क्रीमियाके घोर संग्राममें हज़ारों अँगरेज सैनि-

कोंका वध या मृत्यु हुई श्रीमती सुन २ कर बीमार होगई थीं । प्रधान सेनापति किसी कार्यसे विंडसरके महलमें महारानीसे मिलने गये । श्रीमतीके बालकोंने उनसे कहा कि "आप शीघ्र जाकर सैनिकोंकी प्राण रक्षाकरो नहीं तो हमारी माता मर जायगी । "

जिस समय महारानी बालिका थीं एक दिन राज कुटुंब के लोगोंके साथ कहीं जारहींथीं । पानी बरसनेके कारण मार्गमें की चड़ होगयाथा । किसीने कहा—" मार्ग बहुत बुरा है । चलनेमें शीघ्रता न करो। नहीं तो गिरजाओगी । " श्रीमती उसके कथनपर ध्यान न देकर "मार्ग बुरा! बुरा"!करतीं ज्योहीं आगे बढ़ीं धडामसे धरतीपर गिरगई। तब उस मनुष्यने कहा—" मार्गकी बुराई अब मालूम होगई होगी" आप बोली:— "यह बात मुझे जन्मभर स्मरण रहैगी ॥"

श्रीमतीके सादापनका एक उदाहरण यह है कि, आप सन् १८६८ई०में स्काटलैंड के हाईलैंड प्रदेशकी यात्रा करनेगई थीं।वहांके एक बनरक्षकने श्रीमतीसे कहा कि "मुझ जैसे दीनमनुष्यके बालकका बपतिस्मा यदि आपदें तो मैं अपना सौभाग्य समझूंगा " श्रीमतीने उसका प्रेम देखकर इसबातको स्वीकारकर लिया । हाईलैंडकी यात्राकी आपने एक पुस्तक प्रकाशितकी है उसमें लिखा है कि "जानथामसन नामक अरण्यरक्षकके चौबीस दिनके बालकका बपतिस्मा देने मैं गई । उसके झोंपडेमें खिड़कीके पास एक टेबलपर एक श्वेत कपड़ा बिछाया और उसके ऊपर एक पानी भरा पात्र, बाइबल और बालिकाकी जन्मतिथिका एकपत्र रक्खाथा । मेरेहीनाम पर उस बालिकाका नाम "विक्टोरिया" रक्खागया और मैंने ही उसे बपतिस्मा दिया ॥"

श्रीमतीको चापलूसी पसंद नहींथी! वह सदा स्पष्ट संभाषणको अच्छासमझतीथीं। उनके पास रहनेवाले मंत्री और यावत् कर्मचारियों को कठिन आज्ञाथी कि, वे श्रीमतीसे बातचीत करनेमें कभी चिकनी चुपड़ी बातें न करैं । एक बार उन्होंने अपने एक नौकरकी स्त्रीको बुलाकर उससे कहदियाथा कि तुम अपने पतिको अच्छीतरह समझादेना कि वह कभी मुझसे चापलूसी न करै ॥

एक बार श्रीमती विना किसीको साथलिये बाहर फिरने चलींगई।आसपासके बीमारों और अशक्त दीनोंकी संभाल करना उनका नियमथा।चलते२ एक टेकरी की किसी कुटियामें पहुंची।वहांपर उन्होंने एक वृद्ध पुरुषको खटियापर पड़ा हुआ पाया। श्रीमतीने उससे पूंछा कि"क्या तुम्हारे पास कोई मनुष्य सुश्रूषा करने वाला नहींहै" उसने मुंह विगाड़कर कहाकि " हांनहींहै! जो हैं वे भेडैं चराने गयेहैं

उन्हें आपके दर्शन की बड़ी अभिलाषाथी इसलिये वे आपके दर्शनको जायंगे" श्रीमतीने बहुत देरतक उसके पास बैठकर उसका समाश्वासनकिया और एक पाठ बाइबलका पढ़कर सुनाया। चलते समय श्रीमतीने उसके हाथमें पांच पौंडका एक नोट रखकर कहा"जब तुम्हारे बालबच्चे जंगलसे लौटें उनसे कहदेना कि जिस समय तुम रानीके दर्शन करने गयेथे रानी तुम्हारे दर्शन करने आईथी" ॥

एक दिन श्रीमतीके निकट रक्खाहुआ एक लैंप जल उठा। श्रीमतीने खड़ी होकर उसकी बत्ती उतारदी। नौकर चाकर जो वहां खड़ेथे उनको बडी लज्जाआई और आश्चर्यभीहुआ। श्रीमतीने कहा—"यदि मैं यह पुकारती कि लैम्पमें आगलगगईहै। मेरी सहचरियोंमेंसे एक जनी किसी नौकरसे कहती और वह बत्तीवालेको बुलाता इतनी देरमें लैम्प बिलकुल जलजाता। इसलिये मैंने बत्ती उतार देनाही उचित समझा।"

महारानी खर्च करनेमें बड़ी मितव्ययीथीं। काम होजानेपर जो रुपया बचता वह व्यर्थ नहीं खोया जाताथा। कपड़े जो बालकोंके पहनने बाद उतरते वे औरोंके लिये काम आतेथे।

सौडानके वीर गार्डन की एक बाइबलथी। वह पुस्तक गार्डन की मृत्युके अनंतर श्रीमतीकी भेटहुई। श्रीमतीने उस पुस्तकको हीरेके हारसेभी बहुमूल्य समझकर अपने पास रक्खा।

श्रीमतीकी समयपर विशेष दृष्टिथी। वह निर्दिष्ट स्थानपर नियत समयपर पहुंचनेके लिये कोचवानको केवल पांच मिनट दिया करतीथीं।

महारानी वस्त्र बहुतही सादे पहनना पसंद करतीथीं। एक बार उनकी घुड़सालमें एक नये कर्मचारीने एल सादी पोशाक वाली बुढ़ियाका हाथ पकड़कर यह कहते हुए बाहर निकाल दिया कि—"तुम यहांसे बाहर चली जाओ। महारानी इस समय यहां आने वालीहैं। बाहरी मनुष्यको यहां आनेकी आज्ञा नहींहै।" जब उसे विदित होगया कि उसने श्रीमतीके साथही ऐसी मूर्खता कीहै तो वह बहुत घबराया। और डरकेमारे कांपनेलगा। महारानीने उसके कामकी प्रशंसा की और उसका डर दूर किया।

एमेरिकाकी नाइगरा नदीके इसपार से उसपार रस्सीपर चढ़कर एकमनुष्य चलाजाया करताथा। इस खेलसे उसने एमेरिकामें बहुत रुपया कमायाथा। एमेरिकाके खिलाडी ब्लाडीनकी नकल इंग्लैंडमें भी होना आरंभ हुआ। इस खेलमें इंग्लैंड वालोंका चाव। दिन२ बढ़ने लगा। सन् १८६३ ई०में खिलाड़ीकी आँखोंपर पट्टियां

और पैरोंमें बेड़ियां डालकर रस्सीपर चलाने की तैयारी हुई । इसकार्यमें एक स्त्रीने अपने प्राण खो दिये । श्रीमतीको इस घटना की खबर होते ही उन्होंने लार्ड मेयरको एक पत्र लिखा "आपके द्वारा प्रकाश किये बिना श्रीमतीसे रहा न जायगा कि, बरमिंगहामके एस्टनयार्कमें एक प्राणनाशक घटना होनेसे उनको बहुत दुःख हुआ है । ऐसे जोखमवाले खेलोंमें एक स्त्री की मृत्यु होनेसे उनका चित्त बहुत कातर है । इस बातके बाद भी लोगोंने इस तरह के मेले तमाशे बंद नहीं किये हैं और नये २ खेलका प्रबंध करते जाते हैं यही उनकी बुरीनीतिका उदाहरण है । जो बाग महारानीने अपने पतिके साथ मिलकर प्रजाके सुखके लिये बनवाया है उसका उपयोग आज पीछे मानुषी नियमोंके विरुद्ध कामोंमें न होना चाहिये । महारानी को आशा है कि, आगेसे ऐसा काम न किया जायगा । "

अध्याय ५५.

कर्मचारियोंको उत्तेजना और सत्कार ।

श्रीमतीका जैसा प्रजापर प्रेमथा वैसाही सरकारी कर्मचारियों पर था । वह समय२पर उनके कामों की प्रशंसा कर उन्हें प्रजापालन की उत्तेजना दिया करती थीं । जब कभी कोई उच्चपद प्राप्त कर्मचारी वा सेनाध्यक्ष कहीं जाता तब उसे उसके जाने पूर्व आप अपने पास बुलातीं और उसके साथ भोजन कर उसका सत्कार किया करती थीं । सन् ५७ के बलवेमें लखनऊ का विजय करने वाले सर कालिन केम्पबेलको लिखाथाकि–" आप और आप के वीर सिपाहियों की शूरता का मुझे बड़ा गर्व है । परंतु आपको मैं एक बातका उलाहना देतीहूं । आपको इतनी संभाल रखना चाहिये कि, अधिक हुल्लड़कर सिपाहियोंके प्राण जोखिममें न डाले जौंय । और न स्वयं भयमें पड़ियो क्योंकि आपका जीवन बहुमूल्य है । "

लार्ड एलनबरो जिस समय भारत वर्षके गवर्नर जनरल थे उनकी ईस्टइंडिया कंपनीसे बहुत तकरार होगई थी । लार्ड साहब प्रजाका कल्याण चाहते थे और कंपनीके डाइरेक्टर लोग रुपया और देश । इसविषयमें लार्ड साहबका श्रीमतीसे पत्रव्यवहार हुआ । आपको लाट साहबने लिखाकि–" भारत वर्षमें जिन २ कठिनताओं को मुझे झेलना पड़ता है और डाइरेक्टरोंकी शत्रुता बढ़ीहुई है उनमें मुझे एकही सहारा था । वह यह कि श्रीमती मेरे ढंगको अच्छी तरह जानगई

थीं और उनकीही सहायतासे मैं देशमें शांति स्थापित कर सकाहूं । यह ऐसी शांति है जो अबतक इसदेशमें नामको भी नथी । ”

इसीतरह लार्ड डेलहौसी भारतकी गर्वनर जनरली करके विलायतको लौटे तब आपने उनका बड़ा सत्कार किया था । लार्डसाहबने इसविषयमें लिखाहै कि–“जिसकृपापूर्ण शब्दोंसे श्रीमती अपने एक नौकर को, उसकी सेवा पूर्ण होनेपर शाबाशी देतीहैं उनसे मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव पड़ा है । इसबात पर श्रीमतीको धन्यवाद देने और हर्ष प्रकाशित करनेके लिये मुझे शब्द नहीं मिलतेहैं । इस लिये इतनाही कहताहूं कि, यह सन्मान मेरे जीवनभरके यावत् सत्कारों और आदरों स बढ़करहै ॥ ”

एक कविका कथनहै कि–“नौकरोंके सत्कार्यों से रानी और रानीकी कृपासे नौकर वास्तवमें सौभाग्यशाली हैं । ” उनकी कृपा और उत्तेजनासे नौकर उनकी आज्ञाका पालन करनेमें बहुतही उत्साही रहते थे । क्रीमियाके युद्ध समाप्त होने बाद जनरल सिमसनने अपना पद त्यागदिया । उनका पद सर कोलिन केम्पबेल को देनेके बदले एक नीचे दर्जेके मनुष्यको देदिया । इससे सर कोलिन केम्पबेल अप्रसन्न होगये । और जब फिर लड़ाई आरंभ होनेका अवसर आया उन्होंने जानेसे स्पष्ट नाहीं करदी । श्रीमतीको यह बात विदितहोतेही आपने उनको अपने पास बुलाया।और उदासमुखसे उनका सत्कारकर उन्हें बैठनेको कुरसीदी । उनके समक्ष सब नौकर खड़े रहते थे । किसीको बैठनेकी आज्ञा नथी । इसके बाद उन्होंने कहा–“आप युद्धपर जानेकी नाहीं करतेहो।इसबातसे मुझे बहुत दुःखहै ।” यह कहते २ श्रीमतीका जी भर आया । इस बातका केम्पबेल साहब पर बहुत प्रभाव पड़ा । उन्होंने खड़े होकर श्रीमतीसे प्रार्थनाकी:–“आप जैसी कृपालु स्वामिनीका चित्त मैं कभी दुखाना नहीं चाहताहूं । यदि आप आज्ञादेंगी तो मैं एक साधारण सैनिकके नीचेभी नौकरी करनेको तैयारहूं । ” रूठे हुए केम्पबेलके मनजानेसे लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ परंतु एक दयालु माताके प्रेमपूर्ण कथन पर नाहीं करनेकी किसमें शक्ति होसकतीहै ।

लार्ड एलेनबरोकी तरह श्रीमतीने पश्चिम एफ्रिका की प्रजाके लाभके लिये सर ज्यार्ज ग्रेकी बहुत कुछ सहायता की थी । सरज्यार्ज देशके सच्चे सेवक और श्रीमतीके प्रीति पात्रथे । ब्रिटिश राज्यकी मान रक्षाका उन्हें बहुत विचार रहताथा । वह न्यूजीलेंडके गवर्नरके पदपर नियत होकर जब वहांगये तो उन्हें मालूम होगया कि पार्लियामेंटने यहां के विषयमें नवीन नियम बनाने में भूलकीहै। और इसके प्रचारसे श्रीमतीका वचनभंग होगा । इसबातसे उनकी निन्दाहोगी

क्योंकि जंगली लोग यह नहीं जानतेहैं कि, आईन बनानेवाली पार्लियामेंटहै। इन विचारोंसे उन्होंने उस नियमका प्रचार न कर लिखदियाकि "दशहज़ार मीलके अंतरपर रहकर पार्लियामेंट जो आईन बनातीहै उसमें उसकी अज्ञानता प्रकाशित होतीहै इसलिये स्थानीय गवर्नरको यह अधिकार होना चाहिये कि वह जिस आईन को अनुचित समझे उसका प्रचार न होनेदे । " इस बातसे पार्लियामेंट सर ज्यार्ज से बहुत अप्रसन्न हुई परन्तु महारानीने उनके साहस और बुद्धिमानी की प्रशंसाकी ॥

इसी तरह सर् ज्यार्जग्रे जब पश्चिम एफ्रिकाके गवर्नर नियत हुए तब उन्होंनें वहां जाकर देखाकि होटेंटोट सैनिकोंको पेन्शन देनेके विषयमें प्रणकर पार्लियामेंट उनको तोड़ती है । और इस कारण उन लोगोंमें असंतोष फैलता है । इस बातसे श्रीमतीका अपमान देखकर उनसे रहा न गया । उन्होंने एफ्रिकाकी प्रबंध कारिणी सभासे रुपया लेकर एक ढिंढोरा फेरा और उसमें प्रकाशित कर दियाकि "श्रीमती अपने वीर सैनिकोंको उनके स्वत्वानुसार पेन्शन का द्रव्य देनेमें प्रसन्न हैं । " अपने २ स्वत्वका द्रव्य मिल जानेसे लोगोंमें शांति स्थापन हुई । पार्लियामेंटने इस बातके लिये सर् ज्यार्ज को बहुत डांटा परंतु श्रीमतीने उनकी बहुत प्रशंसाकी और इस कारण उन्होंने पार्लियामेंटकी डांटकी कुछ भी पर्वाहनकी । इस कार्यके लिये वह सदा किसी प्रकारका पार्लियामेंटके विरुद्ध साहस करने पूर्व श्रीमतीकी सम्मति लेलिया करतेथे । सर ज्यार्ज कम्प बेलके सुकार्योंसे दक्षिण एफ्रिकाकी प्रजामें महारानीकी दया बड़ी प्रसिद्ध हो गईथी। जोहानिसबर्गमें सोनेकी खान वाले व्यापारी सोनेका भाव चढ़ानेके लिये ऐसी गप्प उडातेथे कि "श्रीमतीका स्वर्गवास होगया है । " वहांकी प्रजा महारानी पर अधिक प्रेम रखतीथी इसलिये इस गप्पको सुनकर खानोंमें काम करने वाले मज़दूर काम छोड़कर रोने लगतेथे ।

सर ज्यार्ज केम्पबेल महारानीकी उत्तेजनासे समयके अनुसार चलकर एक बार भारत का भी उपकार कर चुके हैं। सन ५७ के बलवे के समय देशमें बिजलीका तार नथा और न शीघ्रगामी धूमपोतथे । उस समय आवश्यकता पड़ने पर समयानुसार चलनेकी गवर्नरोंको आवश्यकता पड़तीथी । बलवेके समय सर ज्यार्जको वहां एक स्टीमर आनेकी खबर मिली । उस समय भारतके मुट्ठीभर अंगरेजोंकी रक्षाके लिये पार्लियामेंटकी आज्ञा लेनेका अवसर नथा । उन्होंने आज्ञा लिये बिना भारत गवर्नमेंटकी सहायताके लिये तीन जहाज़ तैयार

कर उनपर सेना और सामग्री भेजी । इस कार्यके लिये उन्होंने अपनी गाड़ीके घोड़ेतक देदिये और पैरों फिरने लगे । उसी अवसर पर चीनकी चढ़ाई पर जानेवाली एक स्टीमर वहां आपहुँची । सर ज्यार्जको यद्यपि विलायतकी आज्ञा बिना उस जहाज़के कप्तानसे कुछ कहनेका अधिकार नहीं था किन्तु उन्होंने उस समय पार्लियामेंटको कुछ भी न गिना और जहाज़ को अपने ही अधिकारसे भारतको भेज दिया । इसी सेनाकी सहायतासे सर कोलिन केम्पबेलने लखनऊका विजय किया । इस बातपर भी पार्लियामेंटने उनकी अनुचित स्वतंत्रताको अच्छा न समझा किन्तु उन्होंने श्रीमतीकी ओरसे प्रशंसा पाई ॥

आजकल पश्चिम एफ्रिकाकी प्रजाको महारानीके शासनमें शांति पूर्वक रखनेका मंत्रिमंडल प्रयत्न करताहै परंतु वहां वाले इस शासन को अच्छा नहीं समझते और इसीलिये लडते झगडतेहैं किन्तु सर ज्यार्ज ग्रे चाहतेथे कि छोटे२देशोंको जोड़कर उनकी भिन्न२प्रजाओंको एक करदेना उत्तम होगा परंतु मंत्रिमंडल इस बातको पसंद नहीं करताथा । मंत्रिमंडल से सर ज्यार्ज ग्रेकी इस विषयमें न पटी और इसीलिये उसने उनको एफ्रिकासे बुलवा लेनेका प्रस्ताव किया । श्रीमतीका सर ज्यार्जसे स्वतंत्र पत्र व्यवहारथा और उनकी योजनामें सहानुभूति और प्रेरणाभी आपकी हीथी और श्रीमतीको विश्वास था कि जंगली लोगोंको मुट्ठीमें रखने और सुधारनेके लिये सरज्यार्जका प्रयत्न उत्तमहै।श्रीमतीकी सरज्यार्ज ग्रेपर कृपा देखकर मंत्रिमंडलको भी भयथा कि वह हमारे कथनसे उन्हें बुलालेना स्वीकार न करेंगी । इस विषयके कागज लेकर जब प्रधान अमात्य श्रीमतीके पास हस्ताक्षर करानेगये तब उनसे आपकी क्या बातेंहुई—इस बातकी तो किसीको खबर नहीं हुई परंतु इतना सुनागयाहै कि आप प्रधान अमात्यपर इस बातके लिये बहुत रुष्ट हुई और कहाकि "जिस व्यक्तिने अपनेको सौंपे हुए कार्यसे अधिक करनेका प्रयत्न कियाहै जो अपने देश और रानीके लिये परिश्रम कर रहाहै और जो रानीका सच्चासेवकहै उसका अपमान कर पीछा बुलालेना योग्य नहीं है" परंतु राजनियमके अनुसार प्रधान अमात्यके प्रस्तावको अस्वीकार करनेमें पार्लियामेंटको तोड़ना पड़ताथा क्योंकि यह प्रस्ताव बहुमतसे पास हुआ था इसलिये आपने आनाकानीके अनन्तर उसपर हस्ताक्षर करदिये । हस्ताक्षरतो आग्रहमें आकर लार्डडर्बीने करालिये परंतु पीछेसे वह बहुत पछताये और उन्होंने एक मित्रसे कहाकि "आज मेरे हाथसे एक अनुचित कार्यहोपड़ा । इस गवर्नरको पदच्युत करना योग्य नहींथा" ॥

यह आज्ञापत्र जिस समय एफ़्रिकामें पढागया प्रजाको बहुतही दुःख हुआ। वहां वालोंने कहाकि "श्रीमतीने हमपरसे दया हटाली। और हमारे हृदय दुखाडाले" उन लोगोंको इतना कहनेहीसे संतोष नहीं हुआ किन्तु उन्होंने सर ज्यार्जग्रेको फिर वाइसराय नियत करनेके लिये प्रार्थना पत्र भेजा।आज्ञापातेही वह जहाज़ पर सवार होकर इंग्लैंड पहुंचे। उनके पहुंचते ही २ उनको फिर लौटनेकी आज्ञाहुई। और लार्ड डरबी का मंत्रिमंडल टूटकर लार्ड पामर्स्टन के दीवान होतेही वह फिर एफ़्रिका को विदाहुए ॥

परलोकवासी महामान्य मिस्टर ग्लैडस्टनपर उनका बड़ा प्रेम और पूज्यबुद्धि थी। १४ मई सन् ९७ को तीन मासकी बीमारी के बाद जब इनका देहान्त हुआ तब आपने बहुत शोक कियाथा। उन्होंने सहानुभूति प्रकाशित करनेके लिये मिस्टर ग्लैडस्टनकी पत्नीके नाम जो पत्र लिखा वही इस बात का प्रमाणहै। उसमें लिखाथा कि–"आपका पति सदाके लिगे विश्राम करता है किन्तु मेरा हृदय आपके पास है । आज उनको समाधि करनेकी धूमधाम आपके लिये बहुत ही हृदय विदारक होगी। परंतु इस बातसे आपको हर्षित होना चाहिये कि मेरे शासनमें उस परम प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ की योग्यता, नेकचलनी और गुणों के लिये प्रजा उसका कितना सम्मान करती है और उसके वियोगसे कितनी दुःखी है। मेरे और मेरे कुटुंबके सुखके लिये वह जैसे दत्तचित्तथे उन्हें मैं सदा सम्मान पूर्वक स्मरणरक्खूंगी। " इसीपत्रसे मिस्टर ग्लैडस्टन पर श्रीमती और प्रजाकी पूज्यबुद्धि भली भांति विदित होती है। मिस्टर ग्लैडस्टन सर्वप्रिय मनुष्य थे। केवल इंग्लैंड और भारत बर्षमें ही नहीं किन्तु भूमंडल भरमें वह परम बुद्धिमान् और उत्तम समझे जातेथे और शत्रुभी उनकी प्रशंसा करतेथे ॥

अध्याय ८६.

राजनैतिक कामोंमें प्रभाव।

कुछ काल पूर्व किसी समाचार पत्रमें मिस्टर डबल्यू टी स्टीड का एक लेख प्रकाशित हुआथा उसमें लिखाहै कि–" रानी विक्टोरियाका वास्तविक शासन सन् १८६१ ई०में आरंभ हुआ है।राज्ञीपतिकी मृत्युके पश्चात् हमें रानीके शासन से काम पड़ाहै। जबतक वह जीते रहे राजसी आज्ञापत्रोंमें रानीके हस्ताक्षरके सिवाय एक भी शब्द रानीका नहीं लिखा रहताथा किन्तु सबही उनके पति लिखा करतेथे। और उनकी मृत्यु के अनन्तर समस्त लेख रानीके हाथ का होताहै " ॥

सन्१८८५ई०में मिस्टर ग्लैडस्टनकी और लार्ड सालिस्बरीकी परस्पर खटपट बढ़ती देखकर नवीन पार्लियामेंट का संघटन होनेतक आपने राज्यका काम चल नेमें कठिनता पड़ना निश्चय करलिया तब दोनों को दबाकर ऐसा मेल करा दिया जिससे नवीन संघटन तक किसी तरहकी गड़बड़ न पड़ने पाई । रूसके विषय-में जिस प्रकारकी नीतिका इंग्लैंड बहुत कालसे अवलंबन करता आयाहै उसका लार्ड बीकान्स फील्ड के मरने बाद भंग होने वालाथा क्योंकि सबही लोग उस-के विरोधी थे किन्तु श्रीमतीने अपनी ही इच्छासे उस नीतिका परिवर्त्तन न होने दिया। सन्१८६१ई०में एमेरिकाके प्रजातन्त्र राज्य और सन्१८६४ई०में जर्मनी के साथ युद्धमें परिणत होनेसे श्रीमतीने बचाकर इंग्लैंड पर का बहुत बड़ा क-लंक दूर कियाथा॥

जब२ पार्लियामेंटका भंग होकर नवीन संघटनका समय आताहै और लिब-रल और कंसर्वेटिव दलमें परस्पर खैंचातान बढ़ जातीहै दोनों दलोंको दबाकर ठीक मार्गपर लानेमें इंग्लैंडके शासन कर्त्ताकी बुद्धिमानी देखी जातीहै।वह समय बड़ा बारीक होताहै और आपसकी खैंचातानमें राज्य और प्रजाको बहुतही हानि उठाने की संभावना होतीहै।जब ऐसा अवसर आया श्रीमतीने अपने पूर्ण प्रभावसे लोगोंको ठीक मार्गपर चलाया । सन् १८३९ई० में आपकेही प्रभावसे पदच्युत होनेका अवसर आनेपरभी लार्ड मेलबोर्न प्रधान अमात्य रहसके और सन्१८४५ ई० में सर राबर्ट्स पील कोभी आपनेही प्रधानत्वसे गिरते हुए बचायाथा । उनके सामने दशअमात्य हुए । और पंद्रह बार ऐसा अवसर आया जिसमें बिलकुल मंत्रिमंडलका परिवर्त्तन होगया ॥

भारतवर्षमें सन् १८५१ई० में जो उपद्रव हुआ उसके आरंभमें लार्ड केनिंगूने रिपोर्ट करते समय लिखाथा कि उपद्रवमें अधिक भयकी संभावना नहीं है परन्तु श्रीमतीने उनके कथनपर विश्वास न किया और प्रथम दिनकी सूचनाहीसे गदरका काम अधिक गंभीर समझकर मंत्रि मंडलको सचेत करदिया ॥

अध्याय ५७.

छोटे मोटे चुटकुले ।

पतिकी मृत्युके बाद कुछ कालतक एकान्त वास करने के अनंतर श्रीमती जो प्रथम वार राजमहल से निकलीं तो नेरली अस्पताल देखने पहुंची । अस्पताल बड़ा लंबा चौड़ाहै । उसकी गेलेरियां पाव मील लंबी हैं। डाक्टरों ने सोचा कि

श्रीमती एकाध गेलरी देखकर थकजायंगी । इसलिये उन्होंने एक गेलरी देख-चुकने बाद श्रीमतीको लौट जानेका अनुरोध किया परंतु आपने कहा कि "यदि मैं समस्त अस्पताल देखे विना लौट जाऊंगी तो बहुत से रोगियों की आशा भंग होगी " ॥

डयूक आफ् यार्कके बालकोंपर आपका बहुत प्रेम था । एकदिन श्रीमतीने अपने प्रपौत्र (डयूक आफ् यार्कके बड़े पुत्र) एडवर्डको अपने पास बुलाया । लड़का बड़ा दंगईथा श्रीमतीके भोजनकी सामग्रीमेंसे इधरउधर लौटपौट करनेलगा। आपने उसे धमकाकर मेजके नीचे बिठलादिया और जब सब तैयारी होगई तो पुचकार कर अपने पास भोजन कराया।तबहींसे बालकको "मेजकेनीचे" का नाम लेकर आप चिढ़ाया करतीथीं ॥

श्रीमतीको चित्र निकलवानेका बड़ा अनुरागथा । इसकार्यके लिये अलग विभाग नियतथा । समय २ पर आपके चित्र जुदे २ ढंगसे निकालेजातेथे । श्रीमतीके दीर्घ जीवनमें इतने चित्र निकालेगयेथे कि, उनकी सूची तैयारहोनेमें कई वर्ष लगेथे । आप घर और राज्यके अनेक काम होनेपरभी प्रायः समय निकालकर इन चित्रों को देखा करतींथीं ॥

आपको दिखावट बिलकुल पसंदनथी । विंडसर केसलके दक्षिणद्वारपर लोहेका फाटक लगाहै उसपर किसी कर्मचारीने श्रीमतीकी आज्ञाविना चांदीका गिलट करवादिया । एक दिन अनायास आपकी उसपर दृष्टिपडी। देखकर आपने कहा कि इसको अभी छिलवादो । बस आज्ञा पातेही गिलट छिलवाया गया ॥

श्रीमतीके पास एक स्काटलैंड वासी अनाडीसा नौकर रहताथा । उसका नाम जान ब्रौनथा । रानीकी उसपर बड़ी कृपाथी । वह प्रायः श्रीमतीसे कहाकरताथा कि "आप बड़ीकंजूसहैं । आपका लहंगा पुराना होगया।आपका कपड़ा मोटाहै...." इसपर श्रीमती बुरानहीं मानतीथीं । और राजकुटुंबके लोग तथा प्रधान मंडल उसे पदच्युत करनेका निवेदन करते तो उसे भी नहीं सुनतीथीं ॥

प्रथमज्यूबिलीके समयका
महारानीका चित्र ।



अध्याय ५८.

श्रीमतीकी सुवर्ण ज्यूबिली ।

ब्रिटिश साम्राज्यके लिये सन् १८८७ ई० का वर्ष बड़ा हर्षप्रदथा । इंग्लैंडके राज कर्त्ताओंकी एग्लों सेक्सन जातिमें तीनही राजा पचास वा इससे ऊपर वर्षको पहुँचेथे । तृतीय एडवर्ड, तृतीय ज्यार्ज और विक्टोरिया । श्रीमतीके पितामह तृतीय ज्यार्जकी ज्यूबिली सन् १८१० ई० में हुईथी ॥

२१ जूनका शुभ दिवस इस कार्यके लिये नियत किया गयाथा।उसदिन देशभरमें कामकाज की छुट्टीथी।लंडनही क्या बरन् ब्रिटिश साम्राज्यभरके बड़े२ नगरोंमें और भारतवर्षमें हाटबाट गली घर और द्वार, ध्वजा, पताका और बंदनवारोंसे सुसज्जित कियेगयेथे।लंडनके राजमार्गपरलाखों मनुष्योंकीभीड़थी जिससमयश्रीमतीकी सवारी नगरमें निकली प्रजाने हर्षनादकिया।एकदर्शकने लिखाहैकि"उस समय प्रजाकाआन्त रिक हर्ष और नगरकी शोभा अवर्णनीयथी" सवारीमें भारतवर्षके कईएक राजामहाराजाभी संयुक्तथे। इनके रंगबिरंगे वस्त्र और अद्भुत प्रकारके आभूषण लंडनवालोंको विचित्रशोभा दिखारहेथे।भारतीय राजाओंमेंसे इंदोरके महाराज श्रीमान् शिवाजीराव होलकर, श्रीमान् कच्छनरेश,ठाकुरसाहब गोंडल,ठाकुरसाहब लीमडी और ठाकुर साहब मोरवीके सिवाय कूचविहारके महाराजभी संयुक्तथे।इनके अतिरिक्त ईरानके सुलतान, जापानके राजकुमार कोमास्टू, हवाईकी रानी और बहुतसे पूर्वीयदेशोंके राजा महाराजा उपस्थितहुएथे । सेक्सनीके अंधराजा और आस्ट्रियाके युवराजने पधारकर इस उत्सवकी शोभा बढ़ाईथी। धूमधामके साथ श्रीमतीकी सवारी गिरजेमें पहुंची । वहां जाकर आपने उस सिंहासनको प्रणामकिया जिसपर प्रथम राजगादी होनेका उत्सव कियाजाताहै । केंटरबरीके पादरीके ईश्वरोपासना करलेनेके बाद जर्मनीके युवराजने आपके हाथका चुंबनकिया। इसकेबाद श्रीमतीके पुत्र और पुत्रियोंको अनुक्रमसे आपने ओष्ठपानकेलिये दिया परंतु उन्होंने रीतिके अनुसार श्रीमतीके हाथचूमे । फिर समस्त राजकुटुंबने झुक२ कर श्रीमतीसे सलाम किया। तदनंतर भारतके राजाओंका नंबर आया। उनलोगोंसे भी आप बहुत सत्कारपूर्वक मिलीं और एक२ करके सब श्रीमतीकी सेवामें उपस्थित कियेगये। उससमय भारत की देशी सेनाके कई एक अफ़सरभी वहां मौजूदथे ॥

उसदिन लंडनमें बडाभव्य प्रकाश कियागयाथा। दूसरे दिन हाइडपार्कमें बालकों का मेलाथा। अनुमान ३०हज़ार बालक क्रमपूर्वक परेड बनाकर श्रीमतीके सामने

से निकले।उसदिन उन्हें सरकारी बाग़में खेल करनेकी पूरी स्वतंत्रताथी।सब बालकोंको एक२नारंगी, लड्डू और अन्य खाद्यपदार्थ दिये गयेथे।इनके भोजमें श्रीमती, युवराज और अन्य राजकुटुंबके लोगभी संयुक्तथे । इस हर्षमें इंग्लैंड, वेल्स, स्काटलैंड और आयर्लैण्डकी अनुमान३०लाखस्त्रियोंने इतनेहीपौंड इकट्ठेकर श्रीमतीकी भेटकिये। इसद्रव्यकेसाथ स्त्रियोंकी ओरका एक अभिनंदनपत्रथा।इसके सिवाय देश-देशांतरकी प्रजा और राजाओंने असंख्य अभिनंदनपत्र श्रीमतीके पास भेजे थे। उनका उत्तर श्रीमतीने २४ जूनके सरकारी गजटमें इस तरह प्रकाशित करवायाथा:-

"वेस्टमिन्स्टर एबीको जाते और वहांसे लौटते समय मैंने और मेरे बालकोंने प्रजाकी ओरसे जो आदर पाया उस कृपा, अतीव कृपाके लिये मैं अंतः-करणसे धन्यबाद देतीहूं । लंडन और विंडसरमें ज्यूबिली पर मेरी जो प्रजाने अभ्यर्थना की है उसका मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव पड़ाहै । इससे यह निश्चय होगया कि पचास वर्षके मेरे परिश्रम और चिंतासे-(जिनमेंसे २२ वर्ष मेरे अधिक हर्षके बीते जिनमें कि मेरे पतिकी छाया और सहायता थी) जो मैंने कार्य किया उसे प्रजाने जाना हैं । इस बातसे और मेरे देश और प्रजाके लिये जो मेरा यावत् जीवन कर्तव्य हैं उसके अनुरोधसे अब मुझे अपने काममें और भी उत्तेजना मिलीहै । मेरा काम मेरी शेष अवस्थामें अधिक कठिन और झंझट युक्त है । इस महोत्सव पर आश्चर्य जनक शांति (व्यवस्था) और मेरी करोड़ों प्रजाका शुभ वर्त्ताव मेरे अधिक हर्षका कारण है । ईश्वर मेरे देशको रक्षित रक्खे और उसे बरकतदे । यही मेरी प्रार्थना है ।

विक्टोरिया आर और आई. "

इस उत्सवके हर्षमें लंडनमें कई बार सेनाकी क़वायदें हुई । उनमें श्रीमतीने प्रजाको दर्शन दिये और युवराजकी प्रेरणासे जो इम्पीरियल इन्स्टीटयूट बनाया गया उसमें भी आप पधारी थीं ॥

उस दिन गुलाब आदि परम सुगंधित और सौरभेय पुष्पोंकी महक लंडनमें विशेष रूपपर व्याप्त हो रहीथी । पाठक जानते हैं कि बालपनमें श्रीमतीका नाम "मईका कुसुम" रक्खा गयाथा । इसी कारण गुलाबके पुष्पोंका लंडन नगर के हाट,बाट,गली,कूंचे, मकान, छत और खिडकियोंमें ठाठ लगाया गया । वेस्टमिन्स्टर के मार्गपर ऐसा कोई मकान न था जिसके द्वार और खिडकियोंमें पुष्पोंके हार, बंदनवार और गुलदस्ते न हों । डिवनशायर हाऊससे नाना रंगके गुलाबोंका हार समुदाय विकाडिली होकर श्रीमतीकी भेंटके लिये भेजा गया था । और राज भवनके फाटक पर चीनी गुलाबके गुलदस्ते रक्खे गयेथे ॥

यह भी सुननेमें आया है कि जिस समय महारानीकी सवारी उत्सवकी समाप्तिके अनंतर एबीसे लौटी तो आपने वेस्ट मिन्स्टर अस्पताल के पास आते ही कोचवानको आज्ञा देदी कि "थोड़ीदेर हमारी गाड़ीको अस्पताल की खिड़कियोंके निकट खड़ी रक्खो ताकि रोगी लोगभी हमारा मुख देखकर अपने दुःखित मनमें समाश्वासन पासकैं।" इस ज्यूबिलीके शुभ अवसर पर एक विशेष घटना हुईथी। उससे श्रीमतीके राज्यमें एक देशकी वृद्धि देखनेमें आती है। वह घटना यही है कि उस दिनसे श्रीमती भारतकी तरह जुलूलैंडकी भी 'महारानी' कहलाने लगीं। यह उत्सव एटशो नामक स्थानमें किया गयाथा। महारानीकी सुवर्ण ज्यूबिलीके हर्षमें हैदराबादके निजामने भारतीय पश्चिमोत्तर सीमाकी रक्षाके लिये तीन वर्षतक २० लाख रुपया सरकारके भेंट किया था॥

वर्ष ग्रंथि और ईसाई वर्षके प्रथम दिन भारत वर्ष और विलायतमें जो उपाधियां वितरण होती हैं उनके सिवाय इस उत्सवपर भी पदवियां बांटीगई।

भारत वर्षकी प्रजाको इस प्रकारका उत्सव देखनेका प्रथम ही अवसर था और वह यह भी नहीं जानतीथी कि किसी राजाके राज्यासनपर विराजनेके पचासवें वर्षमें कोई उत्सव किया जाता है परंतु श्रीमतीकी प्रजा प्रीति और वात्सल्यसे भारत वासियोंको विशेष प्रकारका हर्ष हुआ। इस उत्सवको स्मरण रखनेके लिये भारत वर्षके अनेक नगरोंमें स्कूल अस्पताल आदि बनाये गये। उत्सवके दिन बड़े २ नगरोंमें रोशनी, सभा और त्योहार किया गया और प्रजा और देशी राजाओंकी हार्दिक भक्ति देखकर श्रीमती और आपके प्रतिनिधि लार्ड लैंसडाउनने धन्यवाद दिया। इस उत्सव पर विलायतके सिवाय भारत वासियोंको जो हर्ष हुआ और जिस प्रकार उन्होंने अपने हार्दिक हर्षको प्रकाशित किया उसके वर्णन करनेकी मेरी इच्छा होने पर भी स्थानाभाव इस कार्यमें बाधा डालता है।

अध्याय ५९.

श्रीमतीकी हीरक ज्यूबिली।

बातकी बातमें सुवर्ण ज्यूबिलीको दशवर्ष निकलकर हीरक ज्यूबिलीका शुभ अवसर आया। १० जून सन् १८९७ई० को श्रीमतीके शासनके ६० वर्ष पूर्णहुए। इंग्लैंडकी गादीपर सबसे अधिक कालतक शासन श्रीमतीके दादा तृतीय ज्यार्जने कियाथा। वहभी उनसठ वर्ष राज्यकर स्वर्गगामी हुएथे। श्रीमतीके शासनको ६० वर्ष पूर्ण हुए। शासनभी ऐसा वैसा नहीं किन्तु प्रजापालन, राज्यवृद्धि, और

इंग्लैंडके सौभाग्य में अद्वितीय । ऐसे शुभ अवसरपर प्रजाको हर्ष होना साधारण बातहै । श्रीमतीने प्रजाको अधिक उत्साहित करनेकी इच्छासे पहलेसे प्रकाशित कर दियाथा कि "मैं लंडन नगरमें अपनी प्रजाके मुखकमलोंका अवलोकन करने और मेरे राज्यके साठ वर्ष सहर्ष समाप्त होनेके हर्षकी बधाई प्रजासे लेनेके लिये राजसीठाटसे स्वयं जाऊँगी । " इस ठाटको देखनेके लिये केवल ब्रिटिश और भारतवर्ष की प्रजाहीनहीं किन्तु यूरोप, एशिया, एमेरिका और एफ्रिका तकके सैकडों मनुष्य इकट्टे हुए थे । और भारतवर्ष के अनेक राजा महाराजाओं के अतिरिक्त प्रायः सबही उपनिवेशोंके प्रधान,और सैनिक, कनाड़ा,आस्ट्रेलिया और भारतकी देशी सेनाका कुछभाग,वेस्टइंडीज़, गोल्डकोस्ट और चीनकी सेना तथा प्रायः समस्त विदेशी राज्यों और साम्राज्योंके प्रतिनिधि उन्नीसवीं शताब्दि की सर्वोत्कृष्टा रानीको मंगल वाद देनेके लिये उपस्थितथे ॥

श्रीमतीके सिंहासनासीन होनेके बाद लंडनमें ऐसा कोई उत्सव नही हुआथा जिसकी इसके साथ तुलना होसकै । इसपर ५० हजारके लगभग सेना इकट्ठी हुईथी । श्रीमतीने इसविषयमें भारतवर्ष और उपनिवेशोंको एकतार दिया था । उसका आशय यहहै:—

"मेरे अंतःकरणसे मैं अपनी प्यारी प्रजाको धन्यवाद देतीहूं । परमेश्वर उन्हें प्रसन्न रक्खै । "इस तारको पाकर भारत वासियों को जो हर्ष हुआ वह अकथनीय है ॥

लंडन नगर की शोभा जो भूमंडल भरके नगरोंका राजा गिने जाने योग्यें है इस समय अपूर्व थी । इस समय वह इंद्रपुरी के साथ स्पर्द्धा करता था । श्रीमतीकी सवारी अंगरेज़ी रीतिके अनुसार निकली थी । भारतवर्षकी सेनाने इस सवारी में उच्चस्थान पाया था। इस उत्सव पर असंख्य सभा, सोसाइटी और राज्योने श्रीमती को बधाई दी थी । और धन पुण्य भी बहुत कुछ किया गया था ॥

इस महोत्सव पर भारतवासियोंने जो हर्ष किया वह सरकार और प्रजाके चित्तमें अभी नवीनहै । देशभरमें अनेक स्कूल, अस्पताल, घंटाघर, पुलें,अनाथालय और नानाप्रकारके प्रजोपकारी कार्य खोलेगयेथे। ज्यूबिलीके दिन स्थान २ पर सभायें होकर श्रीमती और भारतगवर्नमेंटको देशीराजा और प्रजाने बधाई दीथी और सरकारने उत्तरमें हार्दिक धन्यवाद दियाथा। उससमय प्रजाने ईश्वरसे प्रार्थनाकी थी कि दशवर्षके अनन्तर तीसरी ज्यूबिली देखनेका सौभाग्य प्राप्तहो किन्तु प्रजाकीं आशाफलवती न हुई ॥

उत्सवके कुछदिन बाद लंडनमें एक अपूर्व दृश्यहुआथा । ब्रिटिश जलसेनाकी १६६ जहाजोंकी क़वाइदथी । राजकुटुंबके लोग दो रेलभरकर देखनेके लियेगये थे । श्रीमतीभी राजसी ठाटसे क़वाइद देखने पधारीथीं । इस सेनामें ३०हज़ारसे ऊपर मनुष्यथे । जहाज़ोंपर बिजलीका प्रकाशथा । प्रकाशसे रात्रिका दिन होगया था । क़वाइदके बाद तीसों हजार मनुष्योंने एकस्वरसे कहा " महारानीकी जय" तीसहजार मनुष्योंका शब्द गगनभेदी हुआ । प्रजा और दर्शकोंने हर्षसे आशीर्वाद दिया ॥

अध्याय ६०.

प्रजाप्रेमका अंतिम उदाहरण ।

सन१८९९ई० के मार्चमें श्रीमतीने यूरोप की अंतिम यात्राकी।यद्यपि इंग्लैंड और फ्रांस का बहुत कालसे वद्धवैर चलाआताहै और सौडानमें जबसे फरांसीसियोंने इंग्लैड वालोंसे हार खाकर नीचादेखा उनका अंगरेजोंपर विशेष डाहहै परंतु श्रीमतीका वहां वालोंने वैर भूलकर स्वागत किया इसी लिये आपने दूसरी बार जानेका विचारकिया किन्तु ट्रासवाल युद्धमें फरांसीसियोंके गुप्तरूपपर बोरोंको सहायतादेने और इंग्लैंडको इसबातमें निन्दित समझनेकी घटना सन१९००ई०में हुई । इस वर्ष आप फ्रांस होकर इटाली जाना चाहतीथीं और इसकार्य के लिये सन् १९०१ ई०की वंसत ऋतु निश्चित कीगईथी किन्तु इससे पूर्वही असहन शील फरांसीसियोंने महारानीके चित्रका कई बार अपमान किया । इसबातकी ख़बर इंग्लैंड पहुंचनेपर फ्रांसका जाना रोकदिया गया ॥

ट्रांसवाल युद्धमें जानेसे पूर्व श्रीमतीने लार्ड रावर्ट्स और सरदार किचनरको अपने पास बुलाया और उनका बहुत सत्कार कर उन्हें इंग्लैंडकी सेनाकी प्राण रक्षा और ब्रिटिशके सुनामको स्थिर रखनेका अनुरोध किया । दोनोंने वहां जाकर बिगड़ी हुई बात बनादी । मैफकिंग, किम्बर्ली और लेडीस्मिथ का छुटकारा हुआ । और प्रिटोरिया को विजयकर जब लार्ड रावर्ट्स युद्धक्षेत्रसे इंग्लैंड को लौटे तो उनका पहलेसे भी अधिक सम्मान कर उन्हें गार्टर और अर्ल की उपाधिदी । श्रीमतीके शासनमें यह उपाधि सबसे पीछे दीगई क्योंकि आपकी मृत्युसे पूर्व दूसरे किसीको उपाधिदेने का अवसर नहीं मिला ॥

युद्ध क्षेत्रमें घायल सैनिकों की सुश्रूषा और सेवा करने के लिये वीर इंग्लैंड की अनेक साहसी स्त्रियां ट्रांसवाल जानेको तैयार हुईं । आपने विदाहोनेसे पूर्व

उनको बुलाया और जब वे विदाहुई तब आपने कहाकि—"तुम्हारे सुकार्य, देशसेवा और साहसको देखकर मेरा हृदयभी तुम्हारे साथ जायगा" जबतक आपके समयमें ट्रांसवाल के युद्धसे घायल हो२कर ब्रिटिशसेना लौटती रही आप कई बार उन्हें देखने और समाश्वासन करनेके लिये नेटली और ऊलविचके अस्पतालों को गई। वहां दुःखित सैनिकोंने वृद्धमाताके हाथसे गुलदस्ते पाकर बहुत कुछ आरोग्यता पाई। और लंडन नगर की ओरसे दी हुई वालंटियर सेना जब वहां से लौटी तब श्रीमतीने उसके स्वागत के हर्षमें अपने दौहित्र की मृत्युको एक दिन छिपाकर यह दिखला दिया कि मैं प्रजाके सुख दुःखको अपने सुख दुःखसे अधिक समझतीहूं ॥

ईंग्लैंड वालोंके ट्रांसवाल के बोरों से युद्ध करने और उन्हें घर बैठे सतानेको आयर्लैंड वालों ने बहुतही बुरासमझाथा और वे प्रकट रूपपर राजद्रोहकी बातें करने लगेथे । उन लोगोंका क्रोध यहां तक भड़काथा कि उपद्रव होजाने का सम्भव था किन्तु आयर्लैंड की सेना संग्राममें बहुत वीरताके साथ लड़रही थी। ऐसे अवसर पर श्रीमतीने स्वर्गवाससे कुछ मास पूर्व आयर्लैंड जानेका मनसूबा किया। मंत्रियोंने इसकार्यसे आपको रोका परंतु श्रीमती को निश्चय था कि मेरे मुख कमल का अवलोकन करते ही आयर्लैंड वाले ठंढे पड़ जाँयगे। श्रीमतीने हर्ष पूर्वक आयर्लैंड की यात्राकी। यह यात्रा बहुत बर्षों बादहुईथी। प्रजा माता के मुख कमल के दर्शनकी बड़ी उत्सुकथी। दर्शन करते ही सारे दुःखदर्द और कुत्सित विचारोंको बिलकुल भूलगई और श्रीमतीका बहुतही भक्ति पूर्वक धूमधाम के साथ स्वागत किया। वहांसे चलते समय श्रीमतीने आयर्लैंडकी प्रजाके नाम एक पत्र लिखा। उसमें लिखा कि " मैं तुम्हारी भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुई हूं और आयर्लैंड की अंतिम यात्रा मुझे सदा स्मरण रहैगी।" इसपत्र को पाकर वहां वालोंको बहुत हर्ष हुआ ॥

वृद्धा महारानी ।



अध्याय ६१.

महारानीकी अंतिम बीमारी ।

बासठ वर्षके निरंतर परिश्रम, बृहत् साम्राज्यकी चिन्ता, पुत्र पौत्रादिकों के वियोगका शोक और वृद्धावस्थाके कारण श्रीमतीका शरीर अनुमान एक वर्षसे अस्वस्थथा । अनेक वर्षोंसे आपके आंखोंमें पीडा रहा करतीथी । डाक्टरोंको भयथा कि कहीं आंखें जाती न रहैं । एक वर्षसे मंदाग्नि और अशक्ति बढ़ चलीथी । दृढ और विशाल शरीर सूख गया था । महलमें इधर उधर फिरना भी प्रायः पहिये वाली कुरसी द्वारा होता था । थोड़े मास पूर्व आपने जी लगनेके लिये जब यूरोप यात्राका विचार किया तब डाक्टरोंका माथा ठनका था । उन्हें इसी यात्रामें आपके शरीरपतन होनेका भयथा किन्तु उन्होंने आपका हृदय न दुःखानेकी इच्छासे श्रीमतीको वारण नहीं किया था । किसी न किसी बहाने से यूरोपकी यात्रा रोकी गई परन्तु आपने अस्वस्थ शरीरसे ही आयर्लैंड की यात्राकी । यात्रामें किसी प्रकारका विघ्न न हुआ किन्तु लौटने के बादसे ही स्वास्थ्य अधिक २ विगड़ता गया । डाक्टरोंने काम काज बंदकर एकान्त वासकी सम्मति दी परंतु उस समय तक किसीको यह भय न था कि आप की मृत्यु होजायगी । १९ जनवरी शनिवारको सरकारी गजटमें प्रकाशित हुआ कि " गत वर्षसे श्रीमतीकी शक्ति बहुत घट गई है । उनके चित्त को जो अनेक बातोंका कष्ट हुआ है उससे उनके शरीरकी रक्तवाहिनी धमनियां निर्बल पड़ गई हैं इसलिये श्रीमतीके डाक्टरोंने यह उचित समझाहै कि आप कामकाज छोड़कर विश्रामलें । " इस समाचार को पाते ही लोगोंको चिन्ता उत्पन्न हुई । इस अवसरमें श्रीमतीकी भोजनपर रुचि और क्षुधा विगड़गई थी । जो लोग गत ८० वर्षसे आपके स्वास्थ्यको देखरहे थे उनको बहुत भय हुआ । क्योंकि वे जानते थे कि आपके लिये ये दोनों बातें बहुत भयानक हैं । शरीरकी अशक्ति के कारणही आप लार्ड राबर्ट्स से अधिक देर तक बातचीत नहीं करसकी थीं । अंतिम वर्ष में ऐसा कोई दिन नहीं जाताथा जब ट्रांसवास युद्धकी चर्चा न हो । युद्ध में वीर अंगरेजोंकी मृत्युसे आपको बहुत खेदहोताथा और सुनते ही श्रीमती की आंखों में से आंसू बहने लगते थे । श्रीमती प्रति रविवार और ईसाइयोंके प्रत्येक त्योहारको गिरजे में अवश्य जाया करती थीं । १ जनवरीकी प्रार्थनामें भी आप संयुक्त हुइ थीं । १५ जनवरी को आप गधेकी गाड़ीमें बैठकर

आसबर्न के राजमहलके बागमें वायुसेवनके लिये निकली थीं । परंतु २१ जनवरीसे आपकी स्थिति बिलकुल बिगड़गई। रोगोंके बल पकड़नेसे बेचैनी बढ़ी । गठियाने ज़ोर बांधा । खाना पीना प्रायः बंद होगया। बेचैनी बढ़गई और पल२ पर श्रीमती के लिये भय बढ़ने लगा। श्रीमतीके स्वास्थ्यकी प्रजाको सूचना देनेके लिये घंटे २ में विशेषपत्र (Bulletin) प्रकाशितहुए और बिजलीकी चमक की तरह तार द्वारा श्रीमती की भयंकर बीमारीके समाचार ब्रिटिश साम्राज्य क्या बरन दुनिया भरमें फैलगये । श्रीमती की चिन्तामें लोगोंने कामकाज कम करदिया । जहांदेखो वहीं इसबात की कानाफूसी होनेलगी । राजभक्तप्रजाने गिरजे, मंदिर और मसजिदोंमें जा २ कर श्रीमती की आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थनायें की । नानीकी बीमारीके समाचार सुनकर जर्मनीसे सम्राट् द्वितीय विलियम दौड़ेहुए लंडन आये । आस्बर्नसे जाकर श्रीमती की मृत्युके पूर्व शनिवारको युवराजने अपने भानजे जर्मनसम्राट् का स्वागत किया । वह इस समय नानी की बीमारीमें आयेथे इसलिये उन्होंने स्वागतमें कुछभी धूमधाम न करनेदी । और उतावले चलकर श्रीमतीके पास जापहुंचे । श्रीमतीने उनको पहँचानकर अपने निकट बिठलाया परंतु टूटेफूटे संभाषणके अतिरिक्त अधिक बातचीत नहीं की श्रीमती की अशक्ति और भी बढ़गई और राजकुटुंबके सब स्त्री पुरुषोंने आपके पास निरंतर रहना आरंभ किया ॥

मंगलवारको मध्याह्नके पश्चात् आस्बर्नमें उपस्थित रहनेवाले मनुष्योंने जान लिया कि समय निकट आपहुंचाहै । महलके फाटकपर लोगोंकी बहुत भीड़ इकट्ठी होगई । विशेषता यहथी कि इस भीड़में देश प्रदेश और परराज्योंके समाचार पत्रों के संवाददाताओंकी संख्या अधिकथी । तीन मदरासी जो इंग्लैंडके उत्तरभागमें व्याख्यान देतेथे इस समाचारको पाकर महलके फाटकपर पहुंचे और रानीके मुन्शी से बातचीतकर श्रीमतीके अंतिम दर्शन का सौभाग्य प्राप्तकरसके । चार बजे तक लोगोंकी आशा भंग नहीं हुईथी। जो महलके भीतरसे आता वह यही कहताथाकि "स्थिति बिगड़ी नहींहै ।" किन्तु एकाएक चार बजे महलमेंसे " जहाज़ डूबने" का शब्द आया । सुनतेही भीड़में सन्नाटा छागया । लोगोंके पैर थरथराने लगे । हृदय दुःखसे उमड़ आया । इतनेहीमें महलकी पुलिसके अफ़सर मिस्टर चार्लेस फ्रेजरने आकर रोते २ कहाः—

"मुझे परम खेदहै कि महारानीका साढे छः बजे देहान्त होगया।"

इस वज्रपात्से भीड़को जो शोक हुआ उसको प्रकाश करनेकी लेखिनीमें शक्ति नहीं है । उसीसमय सरकारी गजटके विशेषपत्रमें प्रकाशित हुआः—

आस्बर्न राज प्रासाद २२ जनवरी ६॥। बजे,
सायंकाल ।

श्रीमती रानीका ६॥ बजे सायंकालको देहांत होगया । उस समय आपके पुत्र पौत्रादिक समस्त राजकुंटुब उपस्थित था" ॥

अध्याय ६२.

महारानीकी मृत्यु और संसारमें शोक ।

इस खबरके पातेही नगरका बाज़ार खटाखट बंद होगया।आठ बजेसे पहले२ लंडन जन शून्य दिखाई देने लगा । लोगोंके हृदयमें केवल एक ही बातसे संतोष होता था । वह संतोष असाधारण नहीं था । जिनको अपने आत्मीय वर्गमेंसे किसीकी मृत्युके देखनेका काम पड़ाहै वे अच्छी तरह जानते हैं कि मरने वालेके अंत समयके कष्टको देखकर उसके प्यारोंको कितनी व्याकुलता होती है, अपने परम प्रिय संबंधीके मरनेके समय अपने दुःखको भूलकर वे क्यों कर कहने लगते हैं कि इस कष्टसे तो छूटना अच्छा है । परंतु यह बात श्रीमतीको भोगनी न पड़ी । शरीरकी अशक्ति और किंचित् पीडाके सिवाय आपको कुछ दुःख न हुआ । "अनायासेन मरणम् विना दैन्येन जीवनम् ।" इस लोकोक्तिके अनुसार एक देवताकी तरह पुण्य पुरुषके समान बिना कष्ट प्राण प्रयाण कर गया । श्रीमतीका शव कई दिनोंतक मृत्यु मंदिरमें रक्खागया और दीन किसानसे लेकर बड़ेसे बड़े अमीरतकको आकर दर्शन करनेकी स्वतंत्रता दीगई । और सदाकी तरह उन दिनोंमें भी श्रीमतीके शवके पास भारतवासी सेवकोंका पहरा रहा ।

इस मृत्युसे ग्रेट ब्रिटेनकी प्रजाको जो शोक हुआ उसका अनुमान लंडन नगरके प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र "टाइम्स" के लेखसे होताहै । 'टाइम्स'वहांपर बड़ा प्रभावशाली पत्रहै। उसकी सम्मति प्रजाकी वास्तविक सम्मति समझीजाती है । उसने लिखाहै कि—"यद्यपि इंग्लैंड राज्यके नियमोंसे बढ़कर रानीने कभी पैर नहीं रक्खा किन्तु वह अपने कर्तव्य पालनमें कभी विमुख न रहीं । वह ब्रिटिश जातिकी प्रधान न्यायाधीश बनकर सदा काम करती रहीं और जब कभी

आवश्यकता हुई उन्होंने अपने राजत्वके पदके अनुसार मंत्रियोंको अनुचित कार्यसे रोकनेमें त्रुटिनकी। भीतरी और बाहरी बखेड़ोंके समय यदि उनकी नेक चलनी और योग्यता सहायक न होती तो अनेक वार उपद्रव होना संभवथा। यूरोपके राजनैतिक विषयोंमें उनका कितना प्रभाव था। इस बात की साक्षी केवल इतिहास ही दे सकते हैं परंतु हमें इसके बहुत प्रमाण मिले हैं कि जिनमें उन्होंने देश और देशांतर के टंटे बखेड़े मेटनेमें बहुत सेवाकीथी। वह सेवा इतनी बढ़कर थी कि अब उनके न होनेसे हमारे साम्राज्य और हमारी जातिकी स्थिति औरकी और हो जायगी। शक्ति, उन्नति, सुख, शांति और प्रजाकी वृद्धि जो उनके प्रारब्धसे, उनके दीर्घ जीवनमें प्रजाको प्राप्तहुई वह अनंतहै। और इसकारण इतिहासके पृष्ठों पर विक्टोरिया का सुवर्ण जीवन सदा अंकित रहैगा जिनकी मृत्युपर आज हमको परम, परम शोक है।" यह समाचारपत्रोंकी सम्मति की बानगी है किन्तु इस संवादको पाकर ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैण्ड की प्रजाको जो शोक हुआ उसे विलायती पत्रोंने अकथनीय बतलायाहै। उनका कथनहै कि समग्रदेश उससमय शोकसागरमें निमग्न था। इसके चिह्न सर्वत्र दिखलाई देते थे। झंडे आधे झुकादिये गयेथे, लोगोंने काले वस्त्र धारण किये, व्यापार और राजकीय कार्य पूर्ण रूपपर बंद रहा। प्रत्येक नगरके लार्डमेयर, जज और प्रभावशाली पुरुषों की प्रेरणासे महती सभायें एकत्रितकर शोक प्रकाशित किया गया और राजकुटुंब की सेवामें सहानुभूतिसूचक तार वा पत्र भेजेगये। यही दशा श्रीमतीके वृहत् साम्राज्यके प्रत्येक नगर और ग्राम की थी। यावत् उपनिवेशोंसे इसी प्रकारके समाचार आतेथे।

फ्रांस बहुत कालसे इंग्लैंड का कट्टर शत्रु है। ट्रांसवाल युद्धमें इंग्लैंड का अनुचितकार्य मानकर वहांकी प्रजाने महारानी और युवराजके चित्रोंका अपमान कियाथा और लोगों के ऐसे२ मलिन विचार देखकरही श्रीमती तथा युवराजने थोड़े मासपूर्व फ्रांसकी यात्रा बंद रक्खी थी किन्तु इस दुःखदायिनी घटना के समय एकस्वरसे फरांसीसी लोग श्रीमतीके गुणोंका गान करने लगे। वहांकी गवर्नमेंट की ओरसे विदेशीय विभागके मंत्री एम् डेलकासी और अन्य मंत्रिवर्ग प्रेसीडेंट वालडेक रोसियोको लेकर ब्रिटिशराजदूतके पासगये और जो न जासके उन्होंने अपने प्रतिनिधि भेजकर मान्यवर मिस्टर माइकल हर्बर्ट ब्रिटिश राजदूतसे शोक प्रकाशित किया। फ्रांसकी प्रजाके विचार पैरिस के प्रभावशाली पत्र 'फिगेरो' से विदितहोते हैं। उसने लिखाहै कि—"इस प्रभावशालिनी रानी के साथ ही एक दीर्घ कालीन और वैभव सम्पन्न शासनका अंत होगया और

एक सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति उठगया । रानी विक्टोरिया की मृत्युसे ब्रिटिश साम्राज्य की ४० करोड़ प्रजाको ही केवल शोक नहीं हुआ है किन्तु यूरोप और यावत् सभ्यसंसार इससमय शोकमें निमग्न है । संसारमें जितनी जातियों की ब्रिटिशके साथ मित्रता है उसमें से फ्रांस को सबसे बढ़कर शोक हुआ है । हम उन्नीसवीं शताब्दिकी परम विभव शालिनी रानीकी समाधिपर प्रतिष्ठा पूर्वक शिर झुकाते हैं और अपने शोकको ब्रिटिश लोगोंके शोकमें संयुक्त करतेहैं । अब जिस व्यक्तिने ब्रिटिश साम्राज्य का शासन अपने हाथमें लिया है वह प्रजाप्रिय, प्रीतिपात्र और मिलनसार मनुष्य हैं । " फरांसीसी पत्रों में " मैटिन " ब्रिटिश नीतिका खंडन करने में बहुत प्रसिद्ध है उसका कथनहै कि "विक्टोरिया अब संसार में नहींहै । उनकी वृद्धावस्था, उनके उत्तम कार्य और प्राचीन राजाओंके समान उनके सुशासन की जो प्रतिष्ठा थी उसका अंत आगया। यह कहना अनुचित नहींहै कि उनकी मृत्युसे संसारमें बहुत लौटफेर होगा । और बड़ी २ घटनायें होंगी । विस्मार्ककी मृत्यु इसके सामने कुछ नहीहै । थोड़े ही दिनों में मालूम हो जायगा कि इस राजसी समाधिने क्या २ करडाला । हम जानतेहैं कि ६४ वर्षके राज्यमें ग्रेट ब्रिटेन की बहुत कुछ उन्नति हुई है । " यद्यपि यहसंवाद रूसकी राजधानी सेंट-पीटर्स वर्ग मे २३ जनवरी को ही पहुंचगया था किन्तु प्रकाश उसका दूसरे दिन हुआ था । राज्यके झंडे आधे गिरा दिये गये और सेनाध्यक्ष, मंत्रिगण और राजकुटुंबके अनेक लोगोंने ब्रिटिश दूतके पास जाकर सहानुभूति प्रकटकी थी । वहांके समाचार पत्रोंने अपने कालमोंके काले बार्डर लगाकर इस शोकको प्रकाशित किया था । और इस प्रसंगपर कितनेही पेपरों ने श्रीमतीका चित्र भी छपाथा । जर्मनी के सब पत्रों ने मुख्य लेखोंमें इंग्लैंडका इतिहास छापा और महारानी का शोक बड़े प्रातिष्ठित शब्दों में लिखा । यद्यपि उन लेखों में दक्षिण एफ्रिका के युद्ध के विषयमें महारानी के शासनकी निंदाकी गईथी किन्तु उनके लिये बहुतही प्रशंसा थी । और जहां २ पर निंदा की गई वहां अमात्य वर्ग को दोषी बतलाया गयाथा । बर्लिनके सरकारी गजटमें जर्मन सम्राट्की ओरसे आस्बर्नसे २३ जनवरी की लिखी एक आज्ञा मुद्रित हुईथी जिसमें लिखा था कि-"मेरी प्यारी परम प्रतिष्ठित सदास्मरणीया नानी विक्टोरिया ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंडकी रानी तथा भारत वर्षकी महारानी का देहान्त होनेसे मुझे और मेरे कुटुंबको परमशोक हुआ । मुझे भरोसाहै कि मेरी सेना मेरे इस असह्य कष्टमें साथ देगी और इसीलिये मैं आज्ञा देताहूं कि मेरी सेना के

समस्त अफसर लोग चौदह दिन तक श्रीमती का शोक पालें। ग्रेट ब्रिटेनकी रानीके नामकी जर्मनीमें फर्स्टड्रेगून सेनामें तीन सप्ताहतक शोक मनाया जाय और इनमें से प्रथम तीन दिन सेना और सर्व साधारण दफ्तरोंके झंडे आधे झुके रहैं।"

बेलजियमके समाचार पत्रों ने काले बार्डरके साथ विशेष पत्र मुद्रित किये। वहां नाटक बंद रक्खेगये, झंडे आधे गिराये गये और प्रजाने बहुत शोक किया। हालैंड, इटाली, स्पेन, यूनान, डेनमार्क, आस्ट्रिया और यूरोपके सबही देशोंमें रूस, फ्रांस और जर्मनी की तरह शोक मानागया। प्रूशियामें चार सप्ताह, सेक्सको बर्गमें छः सप्ताह, पुर्तगालमें एकमास, रोमेनियामें दशसप्ताह, सेक्सनीमें तीनसप्ताह स्पेनमें तीनसप्ताह, आस्ट्रिया हंगेरीमें एकमास, मौंटनेग्रोमें तीनसप्ताह, बलगेरिया में चार सप्ताह, इटालीमें दो सप्ताह, बेलजियममें आठ सप्ताह, डेनमार्कमें १४ फरवरी तक, बेडनमें तीनसप्ताह, स्वीडनमें तीन सप्ताह और रूसमें तीनमासतक राजरीतिपर शोक रहा॥

यह संवाद जिससमय न्यूयार्क (एमेरिका) में पहुंचा सायंकालके ६॥। बजे थे। समाचार पत्रोंके कार्यालयोंके द्वारोंपर उस समय बडीभीड इकट्ठी हो रहीथी। सुनतेही लोगोंने व्यापार बंद करदिया। सरकारी मकानोंके झंडे आधे गिरादिये गये। एमेरिकाकी राजधानी वाशिंगटनमें समाचार पातेही ब्रिटिश दूतसे वहांके मंत्रिमंडलने सहानुभूति प्रकाशित की। प्रजातंत्रके समस्त मेंबरोंकी सभा इकट्ठी होकर प्रेसीडेंट मेकिनलीने राजासप्तम एडवर्डको सहानुभूति सूचक तार दिया। इस अवसरमें वहां एक घटना हुई। म्यूनिसिपेलिटीके "सिटीहाल" पर जो झंडा उड़रहाथा उसको नगरके लार्डमेयर वेनविकने न झुकानेदिया। यहांतक कि प्रेसीडेंट मेकिनलीने भी उनको समझाया परंतु उन्होंने यही कहा कि "एमेरिकाकी गवर्नमेंटने जब हमको बोर जनरल जूबर्टकी मृत्युके समय झंडा न उतारने दिया तो अबभी हम न झुकावैंगे"। इसबातसे लोग उनपर बहुत अप्रसन्न हुए परंतु उन्होंने अपना हठ न छोड़ा। यह घटना न्यूयार्ककीहै। वहां 'ट्रिब्यून' बहुतप्रभावशाली पत्र समझा जाताहै। उसने प्रथम पृष्ठपर श्रीमतीका चित्र देकर बहुत विस्तार पूर्वक उनका और नवीन राजाका चरित्र प्रकाशितकिया और चीनके वांशिंगटन स्थितप्रतिनिधिने उसपत्रको लिखाकि—"विक्टोरिया बहुतही वृद्धाथीं। उनके दीर्घ जीवनका मैं बहुत आदर करताहूं। ईश्वर उनके अनेक गुणोको जानताथा। जो सम्मान माताकी माताओं और पिताओंकी

माताओंका करना चाहिये वही विक्टोरिया रानीके लिये उपयुक्तहै। उनके न्याय और सरलताकी इतिहास वेत्ताओंमें बड़ीप्रतिष्ठा होगी।" एमेरिकाके समाचार पत्र बडे स्वतंत्रहैं। वहांके प्रेसिडेंटके विषयमें लिखते समयभी कभी दो तीनपृष्ठ से अधिक नहीं लगातेहैं किन्तु प्रभावशाली "ट्रिब्यून" ने सातपृष्ठ में महारानी की प्रशंसा की॥

अध्याय ६२.

महारानीकी समाधि।

श्रीमतीका देहान्त २२ जनवरीके सायंकालको हुआ था किन्तु समाधि दी गई २ फरवरी शनिवारको। उनका शव २७ जनवरीको संदूकमें रक्खा गया। उसके ऊपर हीरोंसे जड़ा हुआ श्वेत साटिन मंढाथा और उस पर राज मुकुट और श्रीमतीके पदक जो उनको भिन्न २ राज्योंसे मिलेथे रक्खे हुएथे। जबतक समाधि न हुई लंडन नगरके गिरजोंमें महारानीकी आत्माको शांति मिलनेके लिये प्रजावर्गने प्रार्थनाकी और राज कुटुंबके सब लोग शवके पास बैठकर प्रार्थना करते रहे। ७ फरवरीको आस्बर्नके राज भवनसे महारानीकी सवारी निकली। उनका संदूक तोपकी गाड़ीमें रक्खा गया। उसे आठ घोड़ोंने खैंचा। संदूकके साथ २ सैनिक वरदीपहने नवीन सम्राट्, जर्मन नरेश, ड्यूक आफ् कनाट रहे और इस अवसर पर फ्रांसका प्रतिनिधि, बेलजियम, यूनान और पुर्तगालके राजा संयुक्त हुए। जिस समय श्रीमतीको जहाज़पर चढ़ाया गया सलामीमें उनके वयकी सूचनाके लिये ८१ तोपें चलाई गई। इस समय विदेशी राज्योंके सात सैनिक जहाज़ जिनमें एक फ्रांसका था उपस्थित थे। सब मिलाकर साठ जहाज़ श्रीमतीकी नौकाके साथ चलतेथे। जहाजसे उतार कर शव जिस समय लंडनके गिरजेमें लेजानेके लिये भूमिपर लाया गया उसके आगे सेनाको लिये हुए लार्ड रार्बट्स और नवीन सम्राट् ज़र्मन नरेश तथा विदेशी राजा पीछे चले। उस समयका दृश्य बहुतही हृदय द्रावक था। इस अवसर पर स्यामके राजकुमार और सीलोन, हांगकांग मलाया और लाबुआनके प्रतिनिधि सर सेसिल क्लीमेंटीभी आपहुंचे थे। श्रीमतीको देखकर प्रजाका हृदय भर आया। लोगोंकी आंखोमेंसे आंसू बहने लगे और सबहीने पुकार २ कर महारानीकी प्रशंसाकी। इसके बाद सन्नाटा छागया। लाखों मनुष्योंकी भीड़को फाड़ती हुई महारानीकी अंतिम सवारी स्मशानमें पहुंचाई

गई । मार्गमें मेमोरियल गिर्जेमें प्रार्थना करने बाद जिस समय श्रीमतीका शव फ्राग मोरमें पहुंचा सेनाने मार्गके दोनों ओर सफ बांधकर अंतिम सलामी ली । इसके अनंतर जो क्रिया हुई वह प्राइवेट थी इसलिये राज कुटुंबके सिंवाय वहां कोई उपस्थित न हो सका । वहां पहुंचने पर पादरियोंने ईसाई धर्मके अनुसार धार्मिक महारानीकी अंत्येष्टि क्रियाकी । फिर श्रीमतीका शव उनके पतिकी क़बरके निकट रक्खा गया । श्रीमती की आज्ञासे उनकी प्यारी अंगूठी जो साठ वर्ष पूर्व अपने पतिकी ओरसे उन्हें प्रथमभेट मिलीथी उनकी अंगुलीमें पहनाकर उनके शवके साथ रक्खीगई। यद्यपि यह अंगूठी बहुमूल्य नथी परंतु श्रीमतीका उसपर इतना प्रेमथा कि पांच मिनटका वियोगभी आपको सहन नहीं होताथा । इनकी अंत्येष्टिक्रियामें कुल ३५॥ हजारपौंडका व्यय कूतागयाहै । और क़बरके ऊपर लैटिनभाषामें इसतरह खुदवायागयाः—

यहां परमपवित्र, शक्तिमती, और सर्वोच्च रानी

विक्टोरिया

धर्मकी प्रथम रक्षका, ग्रेटब्रिटेनकी रानी और

भारतवर्षकी महारानी का

शरीर रक्खाहै ।

अध्याय ६४.

भारतवर्षमें शोक और वाइसरायका व्याख्यान ।

श्रीमतीके स्वर्गवाससे तीनदिन पहले जबसे भारतवर्षमें आपकी बीमारीके समाचार पहुंचे छोटेसे लेकर बडे तकके घरमें यही चर्चाथी । हाट बाट गली दूकान और जहां देखो वहीं लोग श्रीमतीकी प्रशंसा करतेथे । हिन्दू, मुसलमान ईसाई पारसी अपने २ मंदिर, मसजिद, गिरजे और अग्निमंदिर में इकट्ठे हो २ कर श्रीमतीकी आरोग्यताके लिये प्रार्थना करने लगे । महारानी की बीमारी की चिन्ता, भविष्यत् प्रबंधका विचार और इसी प्रकारकी बातचीतमें लोगोंने मनभर कामकरना-छोड़दिया । बड़े नगरोंके दैनिक समाचार पत्रोंने विलायती तारोंसे श्रीमतीका

दिन २ विगडताहुआ स्वास्थ्य सुनाकर प्रजावर्गको चिन्तामें डुबो रक्खाथा इतने हीमें २३ जनवरीका प्रभात हुआ । प्रथम दिन रात्रिके दो बजेकी आई हुई ख़बर अतिशीघ्रही सब नगरोंमें जहां २ तारघरहे पहुंचगई । अन्यत्र दूसरे तीसरे दिन पहुंची । विना किसी की प्रेरणाके व्यापारियोंने व्यापार बंद किया, दूकानदारों ने दूकानें उठादीं और कार्यालयोंमें छुट्टीहोगई । जगह २ महारानी की दयाशी-लताकी प्रशंसा और उनकी मृत्युपर खेदके सिवाय किसी तरहकी चर्चानरही। जिन लोगोंने कभी श्रीमतीके दर्शन नहीं कियेथे, जो नवीन शिक्षा न पाकर ब्रिटिश राज्यका प्रबंध पार्लियामेंट और महारानीके विषयमें भी कुछ नहीं जानतेथे उन्होंने भी महारानीको सराहा । उनके हृदयमें महारानी की वह दया जो श्रीमती समय २ पर भारतके अपराधियोंके प्राण बचाकर दिखाया करतीथीं, निवास कर रहीहै। उसीको यादकर दीनभारतवासियोंने आंसू बहाये ।पुत्रको माताकी मृत्यु से जैसा कष्ट होताहै, छोटे बालक माके तनिकदेर हटने पर मा! मा! कहकर पुकारने लगते हैं, वैसेही अभागे भारतवासी शोकान्वित होगये । जिनलोगोंका पाषाणके समान हृदय था जो दूसरे के दुःखपर हंसा करते थे उन्हों नेभी देश माताकी मृत्युपर शोकाश्रु से वस्त्र भिगो दिये । इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है । वह साक्षात् दयाकी मूर्त्ति थीं । जबर भारतवासियोंपर कष्ट पडता था वे श्रीमती तक अपनी गुहार पहुंचानेका प्रयत्न करते थे । वे अच्छी तरह जानते थे कि माताके पास प्रार्थना न पहुंचनेही से उनपर विपत्तिहै । श्रीमती समय २ पर अपने प्रेम संभाषणसे भारतवासियोंके मनको प्रशांत करती रहती थीं । एसी माताकी मृत्यु सुनतेही देशव्यापी शोक हुआ । छोटे से लेकर बड़े तकके हृदय में मर्माहतहुआ ॥

शोकही शोककी चर्चामें एक सप्ताह निकलगया । २ फरवरी को महारानी की समाधिका दिन निकट आया । उसदिन प्रजाने अपनी इच्छा से बाज़ार बन्द कर दिया । तेल और लवणभी मिलना कठिन होगया । भारत वर्ष में उस-दिन ऐसा कोई नगर न रहा जहां हड़ताल न हुईहो । पढ़े लिखे लोगों ने मिल-कर स्थान २ पर सभायें की । अपढ़भी इन सभाओं में संयुक्त हुए । मंदिरों, मसजिदों और गिरजों में श्रीमतीकी आत्माको शांति मिलनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना की गई । उसदिन कलकत्ता और बंबईका अपूर्व दृश्य था । कलकत्ते के मैदानमें श्रीमतीकी मूर्त्तिके निकट सबही जाति और धर्मके मनुष्य इतने इकट्ठे हुएथे कि पैर रखनेको जगह नहीं मिलतीथी । चारोंओरसे " हरि

बोल २ ” का शब्द गूंजरहा था । अमीर गरीब सबही नंगेपैर हिन्दुओंके धर्मानुसार स्मशान भूमिके योग्य वस्त्र पहने इधर उधर फिरते और भीड़में घुस २ कर मूर्त्तिके दर्शन करनेका प्रयत्न करते थे उसदिन भारतवासी रंगबिरंगे वस्त्र पहनना भूल गये थे । भीड़में श्वेतके सिवाय और रंग कम दिखाई देताथा । यही दशा बंबईकी थी । हजारों वरन् लाखों मनुष्य श्रीमती की मूर्त्तिके पास इकट्ठेथे । लोगोंने अपना हार्दिक प्रेम प्रकाशित करनेके लिये मूर्त्ति-पर फूलोंके हार चढ़ायेथे । उस दिनकी भीड़को मूर्त्तिके पाससे हटानेमें पुलिस भी असमर्थ थी । जिस समय गिरजेसे लौटकर बंबईके गवर्नर लार्ड नार्थकोट वहां आये प्रजाका आन्तरिक प्रेम देखकर छक्क होगये । देशी रजवाड़ोंमें सर्वत्र शोक सूचक सभायें, शोकके वस्त्रोंका धारण करना, अंगरेज़ी रीतिके अनुसार तोपें दागना, उत्सवकी बंदी और राजधानियोंमें हड़ताल हुई । जोधपुर नरेशने अपने भाई बेटे और कर्मचारियों सहित देश माताको वास्तविक माता मान-कर हिन्दू धर्मकी रीतिके अनुसार तालाब पर सूतक निवृत्तिके लिये स्नान कि-या । उस अवसरमें मुसलमानोंका कोई धार्मिक त्योहारथा परंतु मुसलमान राजाओंने किसी प्रकारकी धमधाम न की ॥

अंगरेज़ अफसरोंने उसदिन गिरजेमें स्थानीय अंगरेज़ोंके साथ नमाजें पढ़ीं । बाइसराय और बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर कलकत्तेमें और अन्य स्थानीय गवर्नर अपनी राजधानियोंमें राजरीतिपर इस प्रार्थनामें संयुक्तहुए । वाइसराय ने सरकारी कर्मचारियोंको आज्ञादी और अन्य ब्रिटिशप्रजासे अनुरोध किया कि सबलोग ६ मार्च तक पूरे और १७ अपरेल तक आधे शोक सूचक चिह्न धारण करें । उपाधि वितरणके लिये कलकत्ते में जो राजाओं का एक छोटासा दर्बार होने वालाथा वह बंद रहा और उससमय देशभर में एक साथ शोकके बादल छागये ॥

भारतवासियोंके हृदयमें श्रीमतीकी मृत्युसे कितना शोक हुआ उसका अनुमा-न २५ जनवरीके 'पायोनियर' से होता है । उसने लिखाथा कि “भारत वर्ष-के सब भागोंसे, हमारे समस्त संवाददाताओंकी ओरसे और अधिक तर उन लोगोंकी ओरसे जिनका कभी हमने नाम तक नहीं सुना है इतने तार आ रहे हैं जिनसे हमारा दफ्तर भरा हुआ है । इस समय देश भरमें शोक छा गयाहै । इस साम्राज्यने शोक प्रकाशित करनेके लिये गवर्नमेंटके अनुरोधका मार्ग प्रती-क्षण नहीं किया है किन्तु प्रजाके हृदयमें सच्चा दुःख है और उसी को वह इस

तरह प्रकाशित कर रही है।" यह संवाद २५ जनवरीका है। भारत वासियोंके शोककी बानगी 'पायोनियर' जैसे पत्रमें प्रकाशित होना ही वास्तविक शोकका गांभीर्य बतलाये देता है। दूसरा प्रमाण भारत वर्षके वाइसराय लार्ड कर्जन (बैरन कर्जन आफ् केडस्टल) का व्याख्यान है जो उन्होंने १ फरवरीको भारत गवर्नमेंटकी व्यवस्थापक सभामें दिया था। उसका सार यह है:-

"ग्रेट ब्रिटेनके मुकुटने हमको इस सभामें उपस्थित होकर भारत वासियोंकी भलाई के लिये आईन बनानेकी शक्ति दी है। उस मुकुटको एक शताब्दिके दो तृतीयांश वर्षोंतक धारण करने वाली भली महारानीके लिये जो बहुत वर्षों-तक सुशासन कर प्रशंसा प्राप्त करनेके बाद सिधार गई हैं कृतज्ञ होनेको आज हम यहां इकट्ठे हुए हैं। ऐसी प्रतिष्ठित, बुद्धिमती, पवित्र और निर्दोष रानी (राजकर्त्री) ब्रिटिश राज्यमें कभी उत्पन्न नहीं हुई थी। भारत वर्षने भी उनके समान कोमल हृदया, उदार, न्यायी और अपनी यावत् प्रजाको, चाहे वह किसी जाति और देशकी क्यों नहो, पुत्र सम लालन पालन करने वाली महारानीको असंख्य वर्षोंमें देखाथा। भारतके देशी राजाओंको ऐसी शुद्ध हृदया महारानीके होनेका गर्वथा और भारतकी यावत् प्रजा उनमें माता और रानीके संयुक्त गुणोंको देखती थी। सरकारके सेवक चाहे जहां नियुक्तहों उनसे आज्ञाथी कि वे प्रजाकी रक्षाकरैं और उनके आदर्शपर चलैं। भारतवर्षके शासनमें उन्होंने जो सुकार्य कियेथे उनके कहनेका आज अवसर नहीं है। क्या भारतके शासन और संबंध का यावत् उल्लेख, सन् ५८ के प्रसिद्ध ढिंढोरे में जो हमारे लिये स्वर्णाक्षर युक्तनेताहै, नहीं हैं? इतिहासोंमे राजाओंकी प्रशंसा करने की चालहै। ऐसा हम विजेता, न्यायी, पराक्रमी और साधुओंके विषयमें पढते आयेहैं। परंतु इस जगह प्रशंसामें अत्युक्ति का नामतक नहीं है। श्रीमती अपने पतिके लिये उत्तमका विशेषण दिया करतीथीं वही उनके लिये उपयुक्तहै। यदि उनके राज्यमें कुछ दोष हो वा कभी उनके शासन की निन्दा हुई हो तो उसका कारण श्रीमती नहींथीं। वह सर्वोपरि थीं। उन्होंने प्रत्येक मनुष्यके मनपर अपने गुण अंकित करदियेथे। आजदिन भारत वर्षमें जैसा सच्चा शोकहै वैसा ब्रिटिश राज्यमें कहीं नहीं है। गत दश दिन में मेरे पास भारतवर्षकी अनेक जातों और अनेक मनुष्योंके इतने तार और